



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 50]

No. 50]

नई दिल्ली, बुधवार, फरवरी 25, 2004/फाल्गुन 6, 1925

NEW DELHI, WEDNESDAY, FEBRUARY 25, 2004/PHALGUNA 6, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 फरवरी, 2004

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जनवादी गणराज्य तथा चीनी ताइपेई से प्लास्टिक आथेल्मिक लैंसों के आयातों के संबंध में पाटन-रोधी जांच।

सं० 14/16/2002-डीजीएडी :- 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण एवं क्षति निर्धारण) नियमावली 1995 को ध्यान में रखते हुए:-

क. प्रक्रिया

1. जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है :-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपरोक्त नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से मै० टैक्ट्रान पोलीलैंसिस लि०, हैदराबाद जो कि इंडियन प्लास्टिक आथेल्मिक लैंसिस एसो० (इपोला), कर्नाटक का सदस्य है (जिसे आगे याचिकाकर्ता कहा गया है) से लिखित में एक याचिका प्राप्त हुई थी जिसमें चीन जन.गण. एवं चीन ताईपेई मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए प्लास्टिक आथेल्मिक लैंसिस (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया था। इस याचिका का मै० इंडियन प्लास्टिक आथेल्मिक लैंसिस एसोसिएशन ने भी समर्थन किया है, जिसके अन्य सदस्य मै० इंडियन प्लास्टिक आथेल्मिक लैंसिस. मैन्युफैक्चरिंग कं० प्रा० लि०. कर्नाटक तथा मै० प्रकाश प्लास्टिक इंडस्ट्रीज (मद्रास) प्रा० लि०, चैन्नई है।
- (ii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर 27.8.2002 में एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया जिसके द्वारा

नियमों के उप नियम 5(5) के अनुसार 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की अनुसूची 1 के सीमाशुल्क कोड 9001.50 के तहत वर्गीकृत संबद्ध वस्तु के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी।

(iii) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार अपेक्षित जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी:-

- मै0 ईस्ट ऑप्टिकल ग्लासेज, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 वेंजू बूजहो ग्रुप कं0लि0, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 वेंजू मिग्डा ऑप्टिकल ग्लासेज कं0लि0, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 बिन शीट एंटरप्राइजेज कं0लि0, ताईवान।
- मै0 डेली ग्लासेज एंटरप्राइजेज कं0लि0, ताईवान।
- मै0 वाई एंड एस (तियांजिन) इंडस्ट्रीज लि0, चीन जनवादी गणराज्य।

(iv) प्रश्नावली/अधिसूचना का उत्तर/सूचना निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने दायर की थी:-

- मै0 वेंजू ईस्ट ऑप्टिकल ग्लासिस कं0लि0, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 वेंजू बूजहो ग्रुप कं0लि0, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 वेंजू मिग्डा ऑप्टिकल ग्लासिस लि0, चीन जनवादी गणराज्य।
- मै0 वाई एण्ड एस (लियांन जिन) इंडस्ट्रीज लि0, चीन जनवादी गणराज्य।

ताईवान के किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने कोई भी उत्तर नहीं दिया है

(v) प्राधिकारी ने सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएपी) और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन की इष्टतम लागत निकालने के लिए तथा माल बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की और सके आंकड़ों के लागत की जांच की गयी है।

(vi) जांच 1 अप्रैल, 2001 से 31 मार्च, 2002 तक अर्थात् जांच अवधि के लिए की गयी थी। निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने 1 अप्रैल, 1999 से 31 मार्च, 2002 तक (क्षति अवधि) के आंकड़ों का विश्लेषण किया था।

(vii) प्रारंभिक जांच एवं साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने दिनांक 11.8.2003 की अधिसूचना सं0 14/16/2002-डीजीएडी द्वारा अपने जांच-परिणाम अधिसूचित किए।

(viii) प्राधिकारी ने ज्ञात हिबद्ध पार्टियों, निर्यातक देशों की सरकारों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी थी जिनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था।

(ix) प्राधिकारी ने नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावासों/उच्चायोगों/संबद्ध देशों के प्रतिनिधियों को इस अनुरोध के साथ प्रारंभिक जांच परिणामों की एक प्रति भेजी कि वे प्रारंभिक जांच परिणामों पर अपने विचार प्रस्तुत करें।

(x) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 13 अक्टूबर, 2003 को एक सार्वजनिक सुनवाई की थी जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों, संबद्ध देशों के आयातकों एवं निर्यातकों ने भाग लिया। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से इस प्रकार प्राप्त लिखित अनुरोधों पर इन जांच परिणामों में प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है।

(xi) प्राधिकारी ने चीन में सहयोगी निर्यातकों की मौके पर संभव सीमा तक जांच की और सत्यापित आंकड़ों को अंतिम निर्धारण हेतु हिसाब में लिया गया है।

(xii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध पर विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी साक्ष्यों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाईल निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराई।

(xiii) उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचारित अनिवार्य तथ्यों/आधार को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष 22 जनवरी, 04 को शामिल पक्षकारों को सामान्य प्रकटीकरण एवं गोपनीय प्रकटीकरण द्वारा प्रकट किया गया है तथा हितबद्ध पक्षकारों से उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम निष्कर्षों में भी विधिवत विचार किया गया है।

(xiv) इस अधिसूचना में आया *** चिह्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत सूचना को दर्शाता है और प्राधिकारी ने नियमानुसार ऐसा ही माना है।

संक्षिप्ता के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी के प्रारंभिक निष्कर्षों में पहले विचारित मुद्दों की पुनरावृत्ति नहीं की गयी है।

(ख) विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ख.1. विचाराधीन उत्पाद प्लास्टिक ऑपथेल्मिक लेंस है जिन्हें मानव की आंखों की दृष्टि को ठीक करने के लिए चश्मे में इस्तेमाल किया जाता है। इन लेंसों को तैयार, काटे न गए तथा चश्मों के फ्रेमों में जड़ने के लिए तैयार किया जाता है। इस उत्पाद का आईटीसी (एचएस) वर्गीकरण 9001.50 है।

ख.2 निर्यातक, आयातक तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

ख.2.1 याचिकाकर्ता के विचार

आयातित उत्पाद प्लास्टिक ऑपथेल्मिक लेंस है जिन्हें मानव की आंखों की दृष्टि को ठीक करने के लिए चश्मे में इस्तेमाल किया जाता है। इन लेंसों को तैयार, काटे न गए तथा चश्मों के फ्रेमों में जड़ने के लिए तैयार किया जाता है। इस उत्पाद का आईटीसी (एचएस) वर्गीकरण 9001.50 है जिस पर 30% का अधिकतम सीमाशुल्क (2002 बजट) लगाया जाता है। लेंस बिस एलाइल डाई-कार्बोनेट से बनते हैं जिन्हें 1.498 के रिफ्रैक्टिव इंडेक्स तथा 50+ के एबीवीई नंबरों सहित सामान्यतः सीआर-39 के नाम से जाना जाता है। बुनियादी तौर पर ये आधुनिक युग के लेंस हैं, जिन्होंने सदियों पुराने ग्लास लेंसों का स्थान ले लिया है। याचिकाकर्ता द्वारा यह स्पष्ट किया

गया है कि रक्षात्मक उद्देश्यों एवं धूप-छाया के निमित्त जो लेंस हैं वह वर्तमान याचिका एवं जांच के दायरे से बाहर हैं ।

प्लास्टिक ओप्टिकल लेंसों का निर्माण मुख्यतः दो कच्ची सामग्रियों अर्थात् बिस एल्लाइड डाई-कार्बोनेट (जिसे आमतौर पर सीआर-39 कहा जाता है) और पॉलिमिथाइल मेथाक्राइलेट (पीएमएमए) से किया जाता है । इन दो कच्ची सामग्रियों के अलावा, अन्य सामग्रियां भी हैं जिनका उपयोग प्लास्टिक ओप्टिकल लेंसों के उत्पादन के लिए किया जाता है । किसी अन्य कच्ची सामग्री चाहे वह सीआर 39, पीएमएम हो अथवा कोई अन्य से उत्पादित ओप्टिकल लेंस विचाराधीन उत्पाद के दायरे में आते हैं । याचिकाकर्ता सीआर-39 का उपयोग करके ओप्टिकल लेंसों का निर्माण करता है । ओप्टिकल लेंस आधुनिक लेंस हैं और यह प्राचीन लेंसों जो टक्कर लगने पर आसानी से टूट जाएंगे, का स्थान ले रहे हैं ।

पोलीमेथाइल मेथाक्राइलेट (पी एम एम ए) द्वारा उत्पादित प्लास्टिक आपन्थैल्मिक लेंस अथवा एक्रिलिक लेंस जो शोधन कार्य के लिए प्रयोग किये जाते हैं शोधन कार्य के लिए प्रयोग किये जाने वाले सी आर-39 लेंसों से भिन्न नहीं हैं । अनेक हितबद्ध पार्टियों का दावा है कि सम्बद्ध देशों से आयातित एक्रिलिक लेंस शोधन कार्यों के निमित्त नहीं थे । याचिकाकर्ता ने दावे का विरोध किया है और उन्होंने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि सम्बन्धित आयातकों को आयातक प्रश्नावली के अनुरूप मुहैया कराये जाने के लिए अपेक्षित संगत आयात दस्तावेज और अन्य सूचना दाखिल करने का निर्देश दें । याचिकाकर्ताओं का दावा है कि यदि ये आँकड़े इकट्ठे किए जाते तो यह देखा जा सकता था कि आयातकों ने आयातित लेंसों को शोधन कार्यों के निमित्त होने की घोषणा की थी । यह इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि सुरक्षात्मक कार्यों के लिए आयातित लेंसों पर प्रतिसन्तुलनकारी शुल्क लगता है जबकि शोधक लेंसों को प्रतिसन्तुलनकारी शुल्क के भुगतान के बिना आयात किया जा सकता है । इसके अलावा आयातकों ने माल को बाजार में पुनः बेच दिया । आयातकों और पुनर्विक्रेताओं को निदेश दिया जाए कि ऐसे पुनः विक्रय के बीजक को प्रकट करें और यह पुष्टि करें कि क्या निर्यातक बीजक, आयातक बीजक और पुनर्विक्रेता बीजक से यह पता चलता है कि आयातित लेंस सुरक्षात्मक कार्यों के निमित्त थे अथवा शोधन कार्यों के निमित्त ।

याचिकाकर्ता एकल दृष्टि और द्विफोकसी लेंसों का निर्माण, ताईवान और चीन से आयातित उत्पादों की तरह करते हैं । सदस्य कम्पनियां भी एकल दृष्टि और द्विफोकसी अर्धपरिष्कृत उत्पाद बनाती हैं, यद्यपि इनकी मात्रा कम है ।

ख. 2.2. निर्यातकों के विचार

(क) मै0 वाई एंड एस (तिवानजिन) लि0 चीन जनवादी गणराज्य

चीन से सी आर-39 लेंसों के उत्तरदाता निर्यातकों में से एक निर्यातक मै0 वाई एंड एस इन्डस्ट्री ने यह तर्क दिया है कि विचाराधीन उत्पाद का क्षेत्र काफी विस्तृत है क्योंकि इसके दायरे में ऐसे अन्य प्रकार के लेंस आते हैं जिनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है । चूँकि भारतीय उत्पादक केवल सी आर 39 बनाते हैं, इसलिए घरेलू उद्योग केवल इसी वस्तु के लिए मौजूद हैं ।

इसलिए समान वस्तु और कारणात्मक क्षति के प्रयोजनार्थ जाँच केवल सी आर 39 तक सीमित रखनी अपेक्षित है और उसमें दूसरे प्रकार के लेंस सम्मिलित नहीं किये जा सकते । यह कहना उचित है कि निर्माण की प्रक्रिया और मुख्य कच्चे माल के आधार पर एक्रिलिक लेंस और सी आर 39 में भेद किया जा सकता है । उनकी सर्वोत्तम सूचना के अनुसार किसी भी घरेलू उत्पादक ने कभी भी एक्रिलिक लेंसों का उत्पादन नहीं किया और न ही ऐसा करने के लिए उनके पास सुविधा है । इसलिए जाँच पड़ताल को सी आर 39 तक परिसीमित होना है और एक्रिलिक लेंसों को स्थिति और क्षति के प्रयोजन के लिए अतिरिक्त रखना है ।

(ख) मै० वेन्ड्रो ईस्ट ऑप्टिकल ग्लासेस कम्पनी लि० मै० वेन्ड्रो मिंगडा ऑप्टिकल ग्लासेस कम्पनी लि० एंड मै० वेन्ड्रोवुओ ग्रुप इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं० लि० चीन जनवादी गणराज्य-

चीन के ये निर्यातक प्राथमिक रूप से पी एम एम ए लेंसों के निर्माता/निर्यातक हैं । उन्होंने यह निवेदन किया है कि याचिका के अनुसार याचिकाकर्ता ने यह आरोप लगाया है कि आयातित उत्पाद, प्लास्टिक आण्विक लेंस हैं जिन्हें मानवों की दृष्टि ठीक करने के लिए चश्मों में प्रयोग किया जाता है । इसके अतिरिक्त जाँच प्रारम्भ अधिसूचना में भी वर्तमान जाँच में शामिल उत्पाद को सम्बद्ध देशों के मूल के अलावा वहाँ से निर्यातित " प्लास्टिक आण्विक लेंस " (जिन्हें इसमें इसके बाद सम्बद्ध वस्तु भी कहा गया है) बताया गया है और ये सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम (सीमाशुल्क शीर्ष 9001.50) के अध्याय 90 के अन्तर्गत वर्गीकृत है । प्लास्टिक आण्विक लेंसों का मानवों की दृष्टि ठीक करने के लिए चश्मों में प्रयोग किया जाता है । ये लेंस चश्मे के फ्रेम में लगाने के लिए तैयार बिना कटे हुए रूप में होते हैं । ये लेंस सी आर 39 के रूप में सामान्य तौर पर ज्ञात बि-स ऐलाइल डाइ कार्बोनेट के बने होते हैं जिनका रेफ्रेक्टिव इन्डेक्स 1.498 और एबे नं० 50 प्लस होता है ।

चीन के इन निर्यातकों ने यह तर्क दिया है कि याचिका के अनुसार सम्बद्ध वस्तु का दायरा मानवों की दृष्टि को ठीक करने के लिए चश्मों में प्रयुक्त प्लास्टिक आण्विक लेंसों तक सीमित था । तथापि प्राधिकारी ने निर्धारित न किए जाने वाले और गैर सुधारात्मक लेंसों को शामिल करने के लिए वर्तमान जाँच का दायरा गलती से बढ़ाया है ।

कच्ची सामग्री पी एम एम ए पोलिमीथाइल मेथाक्राइलेट (इसके बाद पी एम एम ए के रूप में उल्लिखित) से विनिर्मित लेंसों को रक्षात्मक और/अथवा शृंगार सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है न कि निर्धारित, सुधारात्मक और चिकित्सा प्रयोजनों के लिए । सी आर 39 से उत्पादित सम्बद्ध वस्तु को हार्ड-रेजिन लेंस कहा जाता है जबकि पी एम एम ए से उत्पादित लेंसों को एक्रिलिक प्लास्टिक लेंस कहा जाता है । उक्त एक्रिलिक प्लास्टिक लेंस याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित सम्बद्ध वस्तु का न तो तकनीकी रूप से और नहीं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन करते हैं और इस प्रकार पी एम एम ए से विनिर्मित सम्बद्ध वस्तु की श्रेणी को वर्तमान जाँच के दायरे से अलग माना जाना चाहिए ।

यह भी निवेदन किया गया है कि ईस्ट मिंगडा और बुइये ने माननीय विनिर्दिष्ट प्राधिकारी को वर्तमान जांच के दौरान और सार्वजनिक सुनवाई के समय भी एक्रिलिक प्लास्टिक लेंसों (पी एम एम ए)

के वास्तविक नमूने दिये थे । एक अविशेषज्ञ के अनुसार भी उक्त नमूने से पी एम एम ए से उत्पादित एक्रिलिक प्लास्टिक लेंसों और ईस्ट मिग्डा और वुओं द्वारा निर्यातित तथा याचिकाकर्ता द्वारा विनिर्मित हार्ड रेंजिन लेंसों (सी आर 39) के बीच भौतिक गुणों और विशेषताओं में असमानताएं प्रदर्शित होती हैं ।

इसके अतिरिक्त माननीय विनिर्दिष्ट प्राधिकारी ने गलती से यह माना है कि प्लास्टिक लेंस सीमाशुल्क शीर्ष वर्गीकरण संख्या 9001.50 के अन्तर्गत आयात किए जाते हैं और इस प्रकार पी एम एम ए से विनिर्मित लेंसों को भी सी आर 39 से बने लेंसों के साथ प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए निर्धारण किए गये लेंसों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है । यह भी माना गया है कि यद्यपि पी एम एम ए और सी आर 39 से बने लेंस सीमाशुल्क शीर्ष वर्गीकरण संख्या 9001.50 के अन्तर्गत दोनों ही वर्गीकृत हैं तथापि वे अलग-अलग गुणधर्मों, कच्चे माल, विनिर्माण प्रक्रिया और अंतिम प्रयोग के कारण पूर्णतया अलग-अलग उत्पाद हैं ।

" प्लास्टिक आध्यात्मिक लेंसेस " उत्पादों के बहुत व्यापक रेंज को कवर करते हैं जो विभिन्न कच्ची सामग्रियों से बनाये जाते हैं जैसे पी एम एम ए (पोलीमेथाइल मेथाक्राइलेट), पी सी (पोलीकार्बोनेट), सी ए बी (सेलूलोज-एसेटो बुटीरेट) और सी आर-39 (बिस अलाइल डाइकार्बोनेट) सभी सीमाशुल्क शीर्ष 9001.50 दूसरी सामग्रियों के चश्मे के लेंस के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं क्योंकि ये ग्लास (शीशे के) लेंस नहीं हैं और " शीशे के चश्मों के लेंस " 9001.40 के अन्तर्गत वर्गीकृत नहीं किये जा सकते हैं । यद्यपि ये सभी सीमाशुल्क शीर्ष 9001.50 के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं तथापि ये सभी उत्पाद भिन्न-भिन्न कच्चे माल से विनिर्मित हैं और पूर्ण तथा भिन्न हैं और/अथवा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं और कच्चे माल की विनिर्माण प्रक्रिया के प्रयोग, स्वामित्व इत्यादि की अपेक्षा पर विचार करते हुए विभिन्न अनुप्रयोगों में प्रयोग किये जाते हैं । उपर्युक्त तथ्यों को देखते हुए यह माना गया है कि सीमाशुल्क शीर्ष को " समान वस्तु " को अभिज्ञात करने के लिए एक मानक के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता है और ये केवल संकेतात्मक हैं और इन्हें जाँच का आधार नहीं बनाया जा सकता है ।

ख. 2.3. आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

फेडरेशन ऑफ आल इंडिया आप्टिकल एसोसिएशन (एफ ए आई ओ ए); मै0 आर. के. आप्टिकल लि0; और मै0 इन्टरप्राइज ट्रेडिंग कम्पनी और मै0 इंडियन आप्टिक्स ने हितबद्ध पक्षकार के रूप में याचिका का जवाब दिया है और अपना लिखित निवेदन प्रस्तुत किया है ।

मै0 इंडियन आप्टिक्स लि0 जिन्होंने आध्यात्मिक लेंसों सी आर 39 का विनिर्माता होने का दावा किया है और जांच अवधि के दौरान सी 39 का विनिर्माण शुरू कर दिया था तथा वे भी एक हितबद्ध पक्षकार के रूप में इसमें सम्मिलित हो गये हैं और इस तथ्य के कारण उन्होंने घरेलू उद्योग होने का दावा किया है । शुल्क की मात्रा और सी एम एम ए और अन्य विशिष्टतायुक्त लेंसों को जांच के दायरे में शामिल करने का विरोध करते हुए उन्होंने आंशिक रूप से याचिका का समर्थन किया है ।

आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचारों का सारांश इस प्रकार है :-

सी आर 39 का विनिर्माण ए डी सी ए/एन एस 200 से किया जाता है जबकि एक्रिलिक लेंसों को पोली मेथाइल मेट्रीएट एक्रिलिक (पी एम एम ए) से विनिर्मित किया जाता है। सी आर 39 का विनिर्माण निक्षेपण प्रक्रिया द्वारा किया जाता है, जबकि एक्रिलिक लेंसों को अन्तःक्षेपण गढ़न प्रक्रिया द्वारा विनिर्मित किया जाता है। अन्तःक्षेपण गढ़न प्रक्रिया में प्लास्टिक कणों (दानों) और कच्चे माल को मिश्रित कर गर्म करके साँचे में डालना शामिल है। विनिर्माण की पूरी प्रक्रिया कुछ मिनटों का समय लेती है।

निक्षेपण प्रक्रिया में मुख्य मिश्रित माल को रबड़ के गार्सकेट लगे हुए निश्चित साँचे में डालते हैं जिसे बाद में पोलीमेराइजेशन के लिए 8 से 16 घंटे के लिए भट्ठी में डाल देते हैं। परिणामस्वरूप अन्तःक्षेपण गढ़न प्रक्रिया द्वारा थोड़े समय में काफी मात्रा में समरूप उत्पादों को उत्पादित किया जा सकता है। जबकि निक्षेपण प्रक्रिया द्वारा कम संख्या में विभिन्न प्रकार के लेंसों का विनिर्माण किया जा सकता है। इसलिए निक्षेपण प्रक्रिया शोधक लेंसों के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। निक्षेपण प्रक्रिया में पहले साँचे तैयार किये जाते हैं और तब लेंसों का गढ़न किया जाता है। अतः कम संख्या में ही इन लेंसों का विनिर्माण किया जा सकता है। निक्षेपण प्रक्रिया में प्रयुक्त साँचे शीशे के होते हैं जिनका मूल्य 200 रु० प्रति नग से कम होता है जबकि इन्जेक्शन मोल्डिंग प्रक्रिया में लागत 2 से 3 लाख रुपये प्रति साँचे से कम की नहीं होती है। दूसरी ओर इन्जेक्शन मोल्डिंग प्रक्रिया में कतिपय स्थिर लागते हैं। किन्तु अधिक संख्या में विनिर्माण किया जाना आवश्यक है। इसलिए यह तकनीक (इन्जेक्शन मोल्डिंग) कम संख्या में शोधन लेंसों के विनिर्माण के लिए उपयुक्त नहीं है।

अतः न केवल विनिर्माण की प्रक्रिया बल्कि मुख्य कच्चे माल के मूल्य के स्तर पर भी उत्पादन लागत में वास्तविक भिन्नता है। एन एस 200 की कीमत लगभग 4.50 अमरीकी डालर प्रति किग्रा० है जबकि पी एम एम ए का मूल्य केवल 1.5 अमरीकी डालर प्रति किग्रा० है। इसके अतिरिक्त पी एम एम ए की संबद्ध लागतें अपेक्षाकृत कम हैं क्योंकि ये दानेदार आकार में हैं और इन्हें साधारण थैलों में संचित किया जा सकता है जबकि सी आर 39 के लिए मोनोमर तरल रूप में होता है और केवल नियन्त्रित स्थितियों में ही संचित किया जा सकता है। भिन्न-भिन्न कच्ची सामग्री और प्रक्रिया का परिणाम काफी भिन्न अंतिम उत्पाद होता है। सी आर 39 की लागत एक्रिलिक लेंसों की तुलना में काफी अधिक है क्योंकि वे बहुत भिन्न उत्पाद हैं और उनमें वाणिज्यिक एवं तकनीकी प्रतिस्थापनीयता नहीं है।

यह कि सुधारात्मक लेंसों का उपयोग आमतौर पर 800 पावर के लिए किया जाता है - इसका मानदण्ड दृष्टि-विषमता प्लस अथवा माइनस/गैर दृष्टि विषमता प्लस अथवा माइनस, प्रिज्मैटिक लेंसेज, बाई फोकल गोल/बाई फोकल डी आकार, गोलाकार, बेलनाकार संख्याएं आदि हैं चूंकि सुधारात्मक लेंसों के लिए बहुत सी किस्में हैं इसलिए उनका विनिर्माण इंजेक्शन मोल्डिंग प्रक्रिया द्वारा नहीं किया जा सकता ।

यह कि लेंसों में स्क्रैच सहने की कम क्षमता है और टूटने योग्य हैं - इन्हें सुधारात्मक लेंसों के रूप में प्रयोग करने के लिए अनुपयुक्त बनाता है, जिन्हें नियमित रूप से पहनना अपेक्षित है । सीआर 39 में स्क्रैप झेलने की अच्छी क्षमता है, धूल का कम प्रभाव और लम्बी आयु है जो इन्हें सुधारात्मक लेंसों के लिए उपयुक्त बनाता है । विवेचित अंतर, स्क्रैच प्रतिरोध क्षमता, दबाव से टूटने की प्रतिरोध क्षमता, विलायक और रसायन प्रतिरोधशक्ति, वेल्डिंग चिनगारी प्रतिरोध क्षमता, प्लास्टिसाइजर प्रवसन प्रतिरोध क्षमता, एजिंग प्रतिरोध क्षमता, गामा रेडिएशन प्रतिरोध क्षमता के कारण हैं । इस प्रकार विभिन्न विशेषताएं दोनों उत्पादों के अंतिम उपयोग और प्रतिस्थापनीयता को प्रभावित करती हैं;

यह कि सीआर 39 की ऑप्टिकल विशेषताएं एक्रिलिक लेंसों की ऑप्टिकल विशेषताओं से बेहतर हैं । प्रमुख अन्तर एक्रिलिक लेंसों की अपवर्तक सूची में एकरूपता के अभाव के कारण उत्पन्न हुआ है । इसके विपरीत अपवर्तक सूची में अधिक एकरूपता है । सीआर 39 विशेषताएं सुधारात्मक लेंसों के लिए आदर्शतः उपयुक्त हैं ।

यह कि धूप के चश्मों के लिए कठोर ऑप्टिकल विशेषताओं की आवश्यकता नहीं होती और धूप के चश्मों का जीवन-चक्र फैशन और कार्मेटिक मूल्य के कारण लघु है, एक्रिलिक लेंस अधिक उपयुक्त हैं - एक्रिलिक लेंस गैर-सुधारात्मक उपयोगों के लिए उचित हैं ।

यह कि सीआर 39 लेंसों का इस्तेमाल उन कार्यों के लिए किया जाता है जिनमें अच्छी ऑप्टिकल गुणवत्ता की आवश्यकता होती है जैसे कैमरा फिल्टर्स, नौसंचालन उपकरणों, वेल्डिंग

शील्डों, उपकरण विंडो, जिनमें वैज्ञानिक, ऐरोस्पेस और नाभिकीय कार्यों इत्यादि में। एक्रिलिक लेंसों का प्रयोग कम ऑप्टिकरण गुणवत्ता की आवश्यकता वाले कार्यों जैसे ऑटोमोबाइल की पीछे की लाइटों, मीटर डिसप्ले पैनल कवर, नैमप्लेट, लैंप कवर्स, एक्वेरियम, धूप का चश्मों, सजावटी सामानों और पुरजों में किया जाता है। गुणों में अन्तर - सीआर 39 की उन्नत गुणों के साथ-2 एक्रिलिक और विनिर्माण की अधिक लागत, उच्च छोर अनुप्रयोगों के लिए ईष्टतम मेक सीआर 39 अर्थात् ऐसे अनुप्रयोग जिनमें उत्तम ऑप्टिकल गुणों की आवश्यकता होती है जबकि निम्न छोर अनुप्रयोगों के लिए एक्रिलिक ईष्टतम है।

सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष ही एकमात्र सूचक है और इसकी जांच पड़ताल की गुंजाइश की किसी तरीके से परिभाषा नहीं की जा सकती है। सीमाशुल्क टैरिफ विश्व सीमाशुल्क संगठन द्वारा विकसित सुमेलीकृत प्रणाली नामावली पर आधारित है। शीर्षों का कार्यक्षेत्र अधिनियम की धारा 9(क) के अन्तर्गत यथापरिभाषित वस्तुओं की समानता को ध्यान में रखते हुए तैयार नहीं किया गया है।

यदि कोई उत्पाद, जिसका आयात किया जाता है, घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित न किया जाए तो यह जांच अवश्य की जाए कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है। समान वस्तु के पहलू पर महत्वपूर्ण मानदण्डों के संदर्भ में विचार किया जाना चाहिए जो सीआर 39 की यह परिभाषा करेगी कि क्या ऐसे महत्वपूर्ण मानदण्ड एक्रिलिक लेंसों और विशिष्टता युक्त लेंसों के बारे में भी समान रूप से मौजूद हैं अथवा इन्हें छोड़ देने की जरूरत है।

उपर्युक्त कारणों से सीआर 39 को एक्रिलिक लेंसों के समान वस्तु समझना गलत होगा। याचिकाकर्ताओं ने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान इस बात पर सिद्धांत रूप से सहमति दी है कि टिन्टेड प्लानों लेंस उनकी याचिका की परिधि के अन्तर्गत नहीं आते हैं।

विशिष्टता युक्त लेंसों को छोड़ना

हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि घरेलू विनिर्माता विशेष प्रकार की सतहों वाले लेंसों का विनिर्माण नहीं करते हैं जैसे :-

एंटी रिफ्लेक्शन मल्टी कोटिंग - सामान्य लेंसों में 92% तक प्रकाश के संचरण की योग्यता होती है, ऐसी कोटिंग करने के पश्चात यह योग्यता 99% तक बढ़ जाती है जिससे नंगी आंख के लगभग दृष्टि उपलब्ध हो जाती है ।

हाइड्रोफोबिक कोटिंग 0- इस कोटिंग से लेंसों से पानी फिसल जाता है जिसके फलस्वरूप वह लेंसों पर नहीं चिपकता है और खरोंच पड़ने के अवसर कम हो जाते हैं ।

एंटी ईएमआई कोटिंग - इस कोटिंग से कम्प्यूटरों, टेलिविजनों, माइक्रोवेव चूल्हों आदि से उत्पन्न इलेक्ट्रो मैग्नेटिक दुष्प्रभाव समाप्त हो जाता है ।

चूंकि घरेलू उद्योग ने उपर्युक्त लेंसों का न तो विनिर्माण किया है और न ही उनके पास विनिर्माण करने की सुविधाएं हैं इसलिए उन्हें विचाराधीन उत्पाद से अलग रखने की आवश्यकता है ।

ख.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के मुद्दे पर याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों और आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के दृष्टिकोणों पर ध्यानपूर्वक विचार किया है । प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि सीमाशुल्क शीर्ष 9001.50 के अंतर्गत वर्गीकृत सम्बद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्लास्टिक आर्थैल्मिक लेंसों के लिए जांच शुरू की गई थी । यह लेंस मानवों की दृष्टि ठीक करने के लिए चश्मों में प्रयोग किए जाते हैं । यह लेंस 1.498 के रिफ्रेक्टिव इंडेक्स और

50 प्लस के एबे नम्बर वाले सामान्य तौर पर सीआर 39 के रूप में ज्ञात बिस एलॉय डाइकार्बोनेट से बनाए जाते हैं। तथापि जांच प्रारंभ करने की अधिसूचना में यह भी कहा गया था कि जांच में सभी प्रकार के प्लास्टिक आर्थैल्मिक लेंस शामिल हैं। सभी प्लास्टिक लेंसों को शामिल करने का प्रयोजन शुल्क लगाने के लिए जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू के साथ-साथ विदेशी 'समान उत्पादों' को अभिज्ञात करना था।

जांच के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद मूल याचिका के साथ-साथ जांच प्रारम्भ अधिसूचना में यथा-उल्लिखित केवल सुधारात्मक अथवा चिकित्सीय उपयोगों के लिए प्लास्टिक आर्थैल्मिक लेंस थे। प्राधिकारी के लिए मुख्य मुद्दा पाटन और क्षति की जांच के कार्यक्षेत्र के भीतर शामिल करने अथवा छोड़ देने के प्रयोजन के लिए घरेलू और विदेशी समान वस्तुओं का निर्णय करना था।

जांच से यह मालूम हुआ है कि प्लास्टिक की विभिन्न सामग्रियों (सीआर-39, पीएमएमए दोनों मुख्यतः सामग्रियाँ होने के कारण) से विनिर्मित लेंसों के प्रयोग अर्थात् सुधारात्मक, नुस्खे में लिखे गए अथवा चिकित्सा प्रयोग और गैर सुधारात्मक (अर्थात्- सुरक्षात्मक लेंस और धूप के चश्मे) पर निर्भर करते हुए कि ये दो अलग-अलग श्रेणियाँ हैं, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित लेंस स्पष्ट रूप से केवल सुधारात्मक प्रयोजनार्थ हैं और इसलिए घरेलू के साथ-साथ विदेशी समान उत्पादों के निर्धारण के लिए केवल सुधारात्मक लेंसों पर विचार किया जाना अपेक्षित है। याचिकाकर्त्ताओं ने स्वयं इस बात की पुष्टि की है कि उनका आशय इस जांच के कार्यक्षेत्र पर गैर सुधारात्मक अथवा सुरक्षात्मक लेंसों को शामिल करना नहीं है। अब इस मुद्दे का निर्णय किया जाना है कि क्या सुधारात्मक लेंसों का विनिर्माण पीएमएमए और प्लास्टिक की अन्य सामग्रियों (सीआर 39 को छोड़कर) से किया जा सकता है और यदि हाँ तो क्या उनसे घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित सीआर-39 लेंसों का तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन हो सकता है।

इस संबंध में प्राधिकारी पाटनरोध संबंधी करार के अनुच्छेद 2.6 का संदर्भ लेते हैं। पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) के साथ पठित करार के अनुच्छेद 2.6 के अनुसार 'समान वस्तु' शब्दों की व्याख्या ऐसे उत्पाद से की जाएगी जो समान हो अर्थात् विचाराधीन उत्पाद के साथ

सभी प्रकार से समान हो अथवा ऐसे उत्पाद की अनुपस्थिति में किसी अन्य ऐसे उत्पाद से की जाएगी जो हालांकि सभी प्रकार से समान न हो परन्तु उसकी विशेषताएं विचाराधीन उत्पाद की विशेषताओं के साथ अत्यधिक मिलती-जुलती हों" । इसलिए इस बात पर विचार करते समय कि क्या कोई वस्तु विचाराधीन उत्पाद की तुलना में समान वस्तु है प्राधिकारी को उनकी तकनीकी और भौतिक विशेषताओं और तकनीकी तथा वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता पर ध्यान देना है ।

प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चीन में निर्यातकों की विनिर्माण सुविधाओं की प्राधिकारी द्वारा की गई मौखिक जांच पड़ताल से यह मालूम हुआ कि कम से कम एक विनिर्माता/निर्यातक अर्थात् मै0 वेनझु ईस्ट ऑप्टिकल कम्पनी, वेनझु इंजेक्शन मोल्डिंग प्रक्रिया के जरिए पीएमएमए से सुधारात्मक लेंसों का उत्पादन करती है । इन लेंसों को पढ़ने के लेंस बनाने और अपने घरेलू बाजार के लिए अन्य सुधारात्मक चश्मों के साथ-साथ अन्य विकासशील देशों के बाजारों के लिए प्रयोग किया जा रहा है । इसलिए निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों का यह तर्क सही नहीं है कि पीएमएमए लेंस केवल गैर-सुधारात्मक और सुरक्षात्मक प्रयोजन के लिए ही प्रयोग किए जाते हैं और सुधारात्मक प्रयोजन के लिए उपयुक्त नहीं हैं । हितबद्ध पक्षकारों ने प्राधिकारी के ध्यान में यह बात लाई है कि पहले मामलों में (एसाइक्लिक अलंकोहल) प्राधिकारी ने समान वस्तु के निर्धारण के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण मानदण्डों की जांच की थी अर्थात् (1) तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता (2) उत्पादों का कार्य और प्रयोग (3) भौतिक और/अथवा रासायनिक विशेषताओं की समानता (4) प्रयोक्ताओं द्वारा एक उत्पाद के स्थान पर दूसरे उत्पाद को पसन्द करना (5) समान उत्पादन प्रक्रिया और (6) अन्तिम उत्पाद की प्रतिस्थापनीयता । प्राधिकारी ने इस मामले में समान वस्तु के मुद्दे का निर्णय करते समय इन पहलुओं की ध्यानपूर्वक जांच की है । यद्यपि पीएमएमए से विनिर्मित सुधारात्मक लेंसों की भिन्न उत्पादन प्रक्रिया है और भिन्न लागत ढांचा है परन्तु उत्पाद का अन्तिम प्रयोग दृष्टि को सुधारने के लिए प्रयोग करना है । दोनों उत्पादों की भौतिक विशेषताएं अत्यधिक समान हैं हालांकि रासायनिक संगठन और उत्पादन प्रक्रियाएं अलग-अलग हैं । प्रयोक्ताओं को जब तक उत्पादों की गुणवत्ता में अन्तर के बारे में समुचित जानकारी न दी जाए तो वे उत्पादों में अन्तर नहीं करेंगे । इसलिए इस तर्क को स्वीकार करना कठिन है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए वे तकनीकी और वाणिज्यिक तौर से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं ।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि कच्ची सामग्री की मात्रा न तो एक आवश्यक विशेषता है और न ही उत्पाद का विवरण है। वह अंतिम उपयोग है जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। प्लास्टिक आन्ध्रलमिक लेंसेस, जिनका उपयोग दृष्टि सुधार प्रयोजनों के लिए किया जाता है, विचाराधीन उत्पाद है। याचिकाकर्त्ताओं ने आगे स्पष्टीकरण दिया है कि सी आर 39 से बने लेंसेज का उपयोग प्राथमिक रूप से दृष्टि सुधार प्रयोजनों के लिए किया जाता है और रंगीन प्लेनो एक्रिलिक लेंसेस जैसा कि याचिकाकर्त्ताओं द्वारा पुष्टि की गयी है न तो विवाद का विषय है और न ही जाँच के दायरे में आता है।

प्राधिकारी की जानकारी में यह बात भी लायी गयी है कि पी एम एम ए द्वारा विनिर्मित गैर-सुधार लेंसेस अधिकांशतः रंगीन धूप के चश्मे होते हैं जिनमें रंगीन पिगमेंट्स को इंजेक्शन के समय प्लास्टिक की कच्ची सामग्री के साथ मिलाया जाता है। दूसरी ओर, सी आर 39 लेंसेस को पी एम एम ए लेंसों की तरह रंजित नहीं किया जा सकता है। इन पर आम तौर पर लेंसों के कास्ट और क्योर्ड हो जाने के बाद कोटिंग प्रक्रिया के दौरान हल्का रंग किया जाता है। कर्वचर के कारण, जो दृष्टि सुधार लेंसों में किया जाना अपेक्षित होता है, इंजेक्शन के समय पी एम एम ए लेंसेस का रंग खराब हो जाता है, पी एम एम ए दृष्टि सुधारक लेंस भी सफेद लेंस है। यही दृष्टि सुधार लेंसों की एक प्रमुख अलग प्रकार की विशेषता है जो इन्हें गैर-सुधारक धूप के चश्मों से पृथक् करती है।

जांच में सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए तर्कों तथा प्राधिकारी द्वारा की गयी जांच पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह विचार है कि गैर-दृष्टि सुधारक या दृष्टि संरक्षण में प्रयुक्त सभी प्लास्टिक प्लेनों रंगीन ग्लासेस विचाराधीन उत्पाद के तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापन नहीं है और इसलिए समान वस्तु नहीं है। तथापि, सभी प्लास्टिक दृष्टि सुधारक लेंस (प्लेनो रंगीन ग्लासेस को छोड़कर) उनमें प्रयुक्त कच्ची सामग्री पर विचार न करते हुए, चाहे कोटेड हो अथवा अनकोटेड, विचाराधीन उत्पाद के तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापन है और इसलिए ये विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु हैं।

प्रकटन विवरण के उत्तर में हितबद्ध पक्षकारों ने पुनः रंगहीन गैर दृष्टि सुधारक प्लेनो लेंसों को भी जांच के दायरे से बाहर रखने का तर्क दिया है। लेकिन प्राधिकारी ने पहले ही ऊपर नोट किया है कि रंगाई, दृष्टिसुधारक लेंसों को गैर दृष्टिसुधारक लेंसों से अलग करने का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है और इसलिए प्राधिकारी को यह तर्क उचित प्रतीत नहीं होता है।

जहाँ तक विशिष्ट लेंसों का संबंध है प्राधिकारी समान तकनीकी एवं वाणिज्यिक मापदण्डों को लागू करने का प्रस्ताव करते हैं। इन विशेष कोटेड लेंसों का विनिर्माण लेंसों के कास्ट एवं क्योर्ड किए जाने के बाद कोटिंग प्रक्रिया के जरिए मूल लेंसों से किया जाता है। लेकिन यह प्रक्रिया केवल वृद्धिशील है और अंतिम उपयोग मूल रूप से समान है। केवल कोटिंग की लागत के कारण लागत में अंतर हो सकता है। जहाँ तक तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता तथा अंतिम उपयोग का संबंध है ये लेंस स्पष्ट रूप से विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरण के उत्तर में अपने अनुरोधों में इन आधारों पर विशिष्टतायुक्त लेंसों को बाहर रखने का मुद्दा पुनः उठाया है कि कोटेड लेंसेस घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित नहीं किए जाते हैं और घरेलू उद्योग का उत्पाद आयातित कोटेड लेंसों से प्रतिस्थापनीय नहीं है। पक्षकारों का यह तर्क सही प्रतीत नहीं होता है। मै0 प्रकाश प्लास्टिक्स को छोड़कर घरेलू उद्योग के पास उत्पादन सुविधाओं में

कोटिंग लाइन्स हैं और वे भारी मात्रा में कोटेड लेंसेस का उत्पादन करते हैं। दूसरे, आयातित लेंसों द्वारा घरेलू लेंसों की प्रतिस्थापनीयता की भी अभी जांच की जानी है। प्राधिकारी ने जैसा कि पक्षकारों ने बताया है तकनीकी और वाणिज्यिक प्रतिस्थापनीयता, उत्पादों के कार्य एवं उपयोग, भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं में समानता, एक उत्पाद से दूसरे उत्पाद को बदलने का उपयोक्ता का विचार समान उत्पादन प्रक्रिया, अंतिम उत्पाद प्रतिस्थापनीयता की जांच की है और मानते हैं कि इन विशिष्टतायुक्त लेंसों में कोटिंग अपेक्षाएं एक प्रगतिशील कार्यकलाप हैं और इसके विशिष्ट प्रयोग हो सकते हैं किन्तु यह एक सीमांत घटिया उत्पाद की जगह ले सकते हैं यदि कीमतें तुलनीय हों। इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि आयातित विशिष्टतायुक्त लेंस घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित कोटेड लेंसों की जगह ले सकते हैं और इसलिए इन्हें समान वस्तु माना जाना चाहिए।

ग. जाँच शुरूआत तथा घरेलू उद्योग की स्थिति

ग-1 निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

जाँच से संबद्ध हितबद्ध पक्षकारों ने अनुरोध किया है कि इस मामले में याचिकाकर्ताओं अर्थात् मै0 टेक्ट्रॉन पोलीलेंसेस और मै0 इंडियन ऑप्टिकल प्रा0 लि0 ने संबद्ध वस्तु का आयात किया है और इसलिए नियम 2 के अंतर्गत दी गई परिभाषा के अनुसार उन्हें घरेलू उद्योग नहीं माना जा सकता है। इसलिए यह अनुरोध किया गया है कि इन आयातों के कारण उक्त उत्पादकों को बाहर रखा जाना चाहिए और घरेलू उद्योग संबंधी योग्यता की जाँच शेष विनिर्माताओं अर्थात् मै0 प्रकाश इंडस्ट्रीज तथा मै0 इंडिया ऑप्टिक्स के संबंध में की जानी चाहिए।

हितबद्ध पक्षकारों ने आगे तर्क दिया है कि मै0 इंडियन ऑप्टिकल लेंसेस मेन्यूफैक्चरिंग कंपनी प्रा0 लि0 एक महत्वपूर्ण विदेशी शेयर धारकों वाली कंपनी है इसके प्रमुख शेयरधारक ऐस्सिलर है जो एक फ्रेंच मल्टीनेशनल है और मै0 सोला ऑप्टिकल लेंस मार्केटिंग प्रा0 लि0 जो आस्ट्रेलिया मूल की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के पूर्ण स्वामित्व वाला उपक्रम है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पाटनरोधी प्रक्रियाओं का प्रयोग अपने लाभ के लिए किया जा रहा है। ऐसी कंपनियों को घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल नहीं माना जाना चाहिए। इन कारणों से, उक्त उल्लिखित विनिर्माताओं को वर्तमान प्रक्रियाओं के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की परिभाषा में शामिल नहीं किया जाना चाहिए।

हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटन विवरण के अपने उत्तर में इस मुद्दे पर अपने दृष्टिकोण को दोहराया है।

ग-2 याचिकाकर्ताओं के विचार

मै0 टेक्ट्रॉन पोलीलेंसेस ने यह पुष्टि की है कि उन्होंने जाँच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है। तथापि, उनके अधीनस्थ उपक्रम मै0 टेक्ट्रॉन आर्थलमिक प्रा0 लि0 ने अध्ययन के उद्देश्य से पूर्णतः प्रयोगात्मक आधार पर लेंसों के केवल 2300 जोड़ों का आयात किया है। मै0 इंडिया ऑप्टिकल ने भी पुष्टि की है कि उन्होंने इस अवधि के दौरान परीक्षण और बेंच मार्किंग के प्रयोजनार्थ केवल 1949 नगों का आयात किया है और यह वाणिज्यिक कार्यकलापों के लिए नहीं किया गया है।

ग-3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार, घरेलू उद्योग से तात्पर्य समग्र रूप से उन घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण या इससे संबंधित किसी अन्य कार्यकलाप में शामिल हों या वो जिनका उक्त वस्तु का संचयी उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनता हो और यदि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबद्ध हों या वे स्वयं इसके आयातक हों तो ऐसे मामलों में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाएगा ।

प्राधिकारी द्वारा याचिकाकर्त्ताओं द्वारा उठाए गए उक्त मुद्दों तथा याचिकाकर्त्ताओं के अनुरोधों के आलोक में याचिकाकर्त्ताओं की स्थिति की जाँच की गयी है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय मानकों के तहत परीक्षण एवं बेंचमार्किंग के लिए विनिर्माताओं द्वारा कम मात्रा में तैयार उत्पाद का आयात दुनिया भर में एक सामान्य प्रक्रिया है । उक्त संदर्भित नियम 2 के अंतर्गत उपबंध ऐसे कम महत्वपूर्ण तथा गैर वाणिज्यिक आयातों पर इस तरह से लागू नहीं होता है कि इन्हें पाटनरोधी प्रावधानों के अंतर्गत प्राधिकारी के समक्ष न लाया जा सके । जहाँ तक मै0 इंडियन आथैलमिक की विदेशी धारिता का संबंध है प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह भारतीय कंपनी कानून के तहत पंजीकृत एक भारतीय कंपनी है जो कतिपय स्तर पर विदेशी धारिता की अनुमति देता है । प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि न तो करार में और न ही भारतीय पाटनरोधी नियमों में ऐसा कोई विशिष्ट उपबंध बनाया गया है जो विदेशी धारिता वाली ऐसी कंपनियों को अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं से राहत की मांग करने से रोके । घरेलू क्षमता तथा प्राधिकारी के समक्ष आने वाले घरेलू उत्पादकों के प्रमुख हिस्से के निर्धारण के प्रयोजनार्थ केवल मै0 टेक्ट्रॉन पोलीलेसेस की घरेलू बिक्री हकदारी पर विचार किया जाएगा । अतः प्राधिकारी का यह विचार है कि याचिकाकर्त्ताओं के पास घरेलू उद्योग की ओर से उक्त याचिका दायर करने संबंधी अपेक्षित योग्यता है ।

घ निर्धारित न्यूनतम सीमाएं

डी जी सी आई एण्ड एस आंकड़ों पर आधारित जांच से यह पता चलता है कि चीन से हुए संबद्ध वस्तु के निर्यातों का संबद्ध वस्तु के कुल आयातों में 75 प्रतिशत हिस्सा बनता है । तथापि, ताइवान से हुए आयात 3 प्रतिशत की न्यूनतम सीमा से कम है और इसलिए प्राधिकारी ने ताइवान को पाटन और क्षति संबंधी जांच से बाहर रखा है । याचिकाकर्त्ताओं द्वारा प्रकटन विवरण के उत्तर में भी इस बात की पुष्टि की गयी है ।

ड. उठाए गए अन्य मुद्दे

याचिका से संबद्ध हितबद्ध पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना करने के लिए घरेलू उद्योग की सबसे सक्षम लागत संरचना पर विचार किया जाए । हितबद्ध पक्षकारों ने मै0 प्रकाश प्लास्टिक्स चेन्नई और मै0 इंडियन आर्टिक्स नई दिल्ली को संबद्ध वस्तु के सक्षम उत्पादक बताया है । प्राधिकारी ने इन दोनों उत्पादकों के आंकड़ों का सत्यापन किया है और जहाँ तक संभव है घरेलू उद्योग के हिस्से के रूप में निर्धारण के लिए मै0 प्रकाश प्लास्टिक्स के आंकड़ों पर विचार किया है ।

मै0 इंडियन ऑप्टिक्स के अनुरोधों पर भी विचार किया गया है और प्राधिकारी ने सार्वजनिक सुनवाई के दौरान उनके अपने अनुरोध पर गुडगांव में उनकी उत्पादन सुविधा और उत्पादन लागत का सत्यापन किया है। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि जाँच अवधि के दौरान उक्त उत्पादक ने कोई उत्पादन नहीं किया था। इसके अलावा, यह कंपनी प्राथमिक रूप से प्लास्टिक लेंसों की आयातक है और इसने हाल में उत्पादन शुरू किया है। इसलिए नियमों में परिभाषित दायरे एवं अर्थ के भीतर यह कंपनी इसे घरेलू उद्योग का हिस्सा माने जाने संबंधी योग्यता को पूरा नहीं करती है। तथापि, प्राधिकारी ने संभव सीमा तक सर्वोत्तम कार्यकलापों की जांच में इस कंपनी के उत्पादन एवं लागतों के कुछेक पहलुओं पर विचार किया है।

च सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

च-1 चीन के निम्नलिखित निर्यातकों ने जांच आरंभ संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया है और जांच प्रक्रिया में पूरा सहयोग दिया है।

1. मै0 वाई एण्ड एस तियानजिन इंडस्ट्री (मै0 गोल्डन ड्रेगन)
2. मै0 वेन्झु ईस्ट कैपिटल
3. मै0 वेन्झु मिंगडा
4. मै0 वेन्झु वेन्झु ग्रुप

(फ) मै0 वाई एण्ड एस (तियानजिन) इंडस्ट्रीज (मै0 गोल्डन ड्रेगन)

मै0 वाई एण्ड एस तियानजिन इंडस्ट्री (मै0 गोल्डन ड्रेगन) चीन में सी आर 39 का एक उत्पादक/निर्यातक है और उन्होंने सत्यापन के लिए अपने उत्पादन लागत तथा निर्यात संबंधी आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने अनुरोध किया है कि उनकी उत्पादन लागत का कारण काफी कम कीमत पर स्थानीय कच्ची सामग्री की उपलब्धता है और उत्पादन के अन्य साधन भी सस्ते हैं। प्राधिकारी ने संभव सीमा तक इस निर्यातक के सत्यापित आंकड़ों पर विचार किया है।

(ख) मै0 वेंगझो ईस्ट ऑप्टिकल, मै0 वेंगझो मिंगडा तथा मै0 वेंगझो वेझो ग्रुप

इस निर्यातक ने प्रश्नावली के उत्तर में तथा अनुवर्ती संपूरक निवेदनों में यह दलील दी है कि उन्होंने केवल जांच की अवधि के दौरान ही पी एम एम ए सनग्लासों का विनिर्माण एवं निर्यात किया था। उन्होंने यह दावा भी किया कि पी एम एम ए सनग्लास, एक भिन्न उत्पाद है तथा उन्हें समान उत्पाद नहीं समझा जाना चाहिए। निर्यातक जांच के दौरान प्राधिकारी ने नोट किया कि विनिर्माता निर्यातक, पी एम ए सनग्लास का उत्पादन इंजेक्शन मोल्डिंग प्रक्रिया द्वारा कर रहे हैं। तथापि, यह भी देखा गया कि यह कंपनी पी एम एम ए सनग्लासों, पी पी एम ए से बने सुधारात्मक लेंसों तथा सी आर-39 लेंसों का विनिर्माण भी उसी परिसर में कर रही है। तथापि, निर्यातक ने दावा किया है कि उन्होंने जांच की अवधि के दौरान अथवा उसके पश्चात, भारत को पी एम एम ए सुधारात्मक लेंसों का निर्यात नहीं किया है तथा पढ़ने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले इन चश्मों का संपूर्ण उत्पादन केवल उनके घरेलू बाजार तथा अफ्रीकी बाजारों के लिए किया जाता है। सी आर 39 उत्पादन लाइन को भी अभी हाल में जोड़ा गया है तथा जांच की अवधि में भारत को इस उत्पाद का कोई निर्यात नहीं किया गया था। इसलिए, उन्होंने पी एम एम ए सुधारात्मक लेंसों तथा सी आर 39 लेंसों की कोई लागत सूचना उपलब्ध नहीं कराई है।

मै0 वेंगझो मिंगडा ऑप्टिकल कंपनी ने संबद्ध उत्पादों, जो मै0 वेंगझो वेझो ग्रुप कंपनी द्वारा निर्यात किया जाता है, जो कि एक ट्रेडिंग कंपनी है तथा मिंगडा के साथ एक विशिष्ट विनिर्माण व्यवस्था रखती है, के एक विनिर्माता के रूप में प्रारंभिक अधिसूचना उत्तर दिया है।

ख-2 पाटन मार्जिन का मूल्यांकन - कार्य प्रणाली तथा मानदंड

ख-2.1 चीन

(क) सामान्य मूल्य

निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी प्रारंभिक अधिसूचना के उत्तर में मै0 वाई एंड एस (तियानजिन) इंडस्ट्रीज लि0 ने अपने लागत आंकड़े, निर्यात बिक्री बीजक तथा घरेलू बिक्री आंकड़ों सहित सी आर 39 लेंसों के निर्यातक के रूप में अपना उत्तर दायर किया है। इस निर्यातक ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से बाजार आर्थिक स्थिति का दावा भी किया है। तथापि, उनके आग्रह पर की गयी निर्यातक आंकड़ों की जांच के दौरान यह देखा गया कि उपर्युक्त कंपनी एक विनिर्माता नहीं बल्कि विभिन्न उत्पादों के लिए एक ट्रेडिंग कंपनी है तथा इस कंपनी के ऑप्टिकल प्रभाग की मै0 गोल्डन ड्रैगन ऑप्टिक्स लि0 जियांगसू, चीन, नामक एक कंपनी के साथ एक विशिष्ट विनिर्माण व्यवस्था (दिनांक 1 जनवरी, 2000 के एक समझौते के अनुसार) है। मै0 गोल्डन ड्रैगन के उत्पादन स्थल को 2003 में डैनयांग में स्थानांतरित कर दिया गया था, जहाँ जाकर प्राधिकारी द्वारा जांच कर ली गयी है। यह विनिर्माता सी आर 39 तथा अन्य कठोर रेजिनों से केवल सुधारात्मक लेंसों का विनिर्माण करता है। विनिर्माता किसी भी प्रकार की घरेलू बिक्री नहीं करता है। विशिष्ट करार के अनुसार इस विनिर्माता के संपूर्ण उत्पादों का व्यापार मै0 वाई एंड एस (तियानजिन) द्वारा एक मध्यस्थ के रूप में किया जाता है। मै0 गोल्डन ड्रैगन के टी वी ए बीजक, मै0 बीजिंग कैशएनगाओ इंपोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं0 लि0 (के एस ए) जो कि एक सरकारी एजेंसी

है, के नाम से प्रस्तुत किए जाते हैं। इस कंपनी के आयात एवं निर्यात परमिट, निर्यातक द्वारा टी वी ए छूट तथा निर्यातों पर शुल्क वापसी प्राप्त करने के उद्देश्य से इस्तेमाल में लाए जाते हैं। इस मध्यवर्ती कंपनी द्वारा कमीशन आधार पर कार्य करने की उम्मीद की जाती है, परंतु उनके सौदों आदि के ब्यौरे सत्यापन के लिए उपलब्ध नहीं हैं। अंतिम निर्यात बीजक मै0 वाई एंड एस इंडस्ट्रीज द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं तथा विनिर्माता को मध्यवर्ती एजेंसी द्वारा भुगतान किया जाता है। तथापि, चूंकि विनिर्माता अपने संपूर्ण उत्पादन का निर्यात सहयोगी निर्यातक द्वारा विशिष्ट सहयोगी विनिर्माण व्यवस्था के तहत करता है तथा उत्पादन आंकड़े रखता है, इसलिए उनके आंकड़े उचित रूप से सत्यापित तथा स्वीकार्य सीमा तक ग्रहणयोग्य थे।

तथापि, निर्यातक ने विनिर्माता के रूप में प्रश्नावली का भ्रामक उत्तर प्रस्तुत किया है जबकि वह संबद्ध उत्पादों का केवल निर्यातक है हालांकि उनके पास संबद्ध उत्पादों के विनिर्माण के लिए वैध करार है। निर्यातकों एवं विनिर्माताओं के पास जांच अवधि के दौरान निर्यात परमिट नहीं था तथा उन्हें एक सरकारी एजेंसी के माध्यम से अपने उत्पादों का निर्यात करना पड़ता था। इन मध्यवर्तियों के बीच हुए सौदों के ब्यौरों तथा व्यवस्था का सत्यापन नहीं किया जा सका। तथापि निर्यातक का निर्यात कीमतीकरण संबंधी फैसला सरकारी दखल से पूर्णतः मुक्त प्रतीत नहीं होता यद्यपि उत्पादन सुविधा अशासकीय नियंत्रण में है, क्योंकि बिक्री सौदों में शामिल सरकारी एजेंसी की भूमिका स्पष्ट नहीं है। संबद्ध उत्पादों की कोई घरेलू बिक्री नहीं हुई है, तथा तीसरे देशों के निर्यात भी इन्हीं मध्यवर्तियों के माध्यम से किए जाते हैं। उपर्युक्त तथ्यों को देखते हुए, निर्यातक को इस मामले में पाटन मार्जिन के निर्धारण के उद्देश्य से बाजार आर्थिक स्थिति तथा वैयक्तिक व्यवहार प्रदान नहीं किया जा सकता। तथापि, प्राधिकारी ने संपूर्ण चीन के लिए एकमात्र आर्थिक सत्ता के रूप में सामान्य मूल्य के निर्धारण का प्रस्ताव किया है। तथापि, जिस सीमा तक आंकड़ों का सत्यापन किया गया है, उसी सीमा तक संबद्ध वस्तुओं के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने का प्रस्ताव किया गया है।

विनिर्माता अर्थात् मै0 गोल्डन ड्रेगन द्वारा सत्यापित की गयी उत्पादन प्रक्रिया, खपत के प्रतिमानों तथा विनिर्माता के कुछ निश्चित लागत घटकों को सामान्य मूल्य निकालने के लिए उपयोग में लाया गया है। प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उस सीमा तक जहाँ तक आंकड़ों का सत्यापन किया जा सका तथा सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए स्वीकार्य समझा गया, चीन के सहयोगी निर्यातक की विनिर्माण लागत को अपनाया है। तथापि, चूंकि सहयोगी निर्यातक द्वारा संबद्ध उत्पादों की कोई घरेलू बिक्री नहीं की गयी इसलिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है। तथापि, जहाँ तक एस ए जी व्ययों का संबंध है, दो मध्यवर्तियों के शामिल होने के कारण निर्यातक आंकड़ों का सत्यापन नहीं किया जा सका। अतः एस ए जी संघटकों के लिए घरेलू उद्योग के आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया है। तथापि, घरेलू उद्योग के आंकड़ों में परिष्कृत लेंसों के साथ-साथ कोटेड लेंसों की उत्पादन लागत शामिल है तथा घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग भी अत्यंत कम है। इसलिए इस आंकड़े को उचित स्तर पर मानकीकृत किया गया है तथा घरेलू उद्योग की परिकलित लागत निकालने के लिए निर्यातक द्वारा सत्यापित आंकड़ों के आधार पर निर्धारित विनिर्माण लागत के साथ जोड़ दिया गया है। परिकलित सामान्य मूल्य निकालने के लिए इस लागत को **% के एक उपयुक्त लाभ मार्जिन के साथ जोड़ा गया है। परिकलित सामान्य मूल्य निम्नानुसार है:-

अनकोटेड लेंस

(प्रति 1000 जोड़े)

(i) विनिर्माण लागत (निर्यातकों/विनिर्माताओं द्वारा सत्यापित आंकड़ों पर आधारित)	रुपए
(क) विनिर्माता/निर्यातकों द्वारा सत्यापित खपत तथा खरीदी रिकॉर्डों पर आधारित वास्तविक लागत:	*****
(ख) उपयोगिताएं	*****
(ग) पैकिंग	*****
(घ) प्रत्यक्ष श्रम (कल्याण व्ययों सहित)	*****
(ii) प्रशासनिक, बिक्री तथा सामान्य व्यय (वित्त लागत, ब्याज, अवमूल्यन इत्यादि सहित) (घरेलू उद्योग के मानकीकृत आंकड़े)	*****
उत्पादन की कुल लागत	*****
उपयुक्त लाभ जोड़ें (5%)	*****
सामान्य मूल्य (कारखाना-द्वार) (रुपए)	***** रुपए
सामान्य मूल्य (कारखाना-द्वार) (अम0डा0)	***** अम0डा0
विनिमय दर (*****)	

कोटेड लेंस

		अमरीकी डालर	रुपए
अनकोटेड लेंसों की लागत	प्रति 1000 जोड़े	*****	*****
कोटिंग व्ययों सहित	प्रति 1000 जोड़े		
टेक्ट्रॉन के आंकड़ों के अनुसार अनकोटेड लेंस का ***%	***%	*****	
कोटेड लेंसों की लागत			
कुल		*****	
लागत			
लाभ सहित	***%	*****	
कोटेड लेंसों के लिए सामान्य मूल्य		*****	
सभी लेंसों के लिए भारित औसत सामान्य मूल्य			*****

प्रकटन विवरणों के उत्तर में निर्यातक ने निवेदन किया है कि चूंकि उन्होंने विनिर्माण की लागत तथा एसजीए व्ययों के संबंध में सहयोग किया है तथा सूचना प्रस्तुत की है इसलिए इसे पूर्ण रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए था तथा घरेलू उद्योग के आंकड़ों के आधार पर एसजीए व्ययों का निर्धारण करने का कोई कारण नहीं था। इस संबंध में प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण तथा पूर्ववर्ती पैराग्राफों में

निर्यातक आंकड़ों की आंशिक स्वीकृति के कारणों को स्पष्ट रूप से रिकॉर्ड किया है। यद्यपि प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों के दायर किए गए भ्रामक उत्तर के मद्देनजर उनके द्वारा प्रस्तुत संपूर्ण आंकड़ों को रद्द करना न्यायसंगत होता परंतु फिर भी प्राधिकारी ने सत्यापित एवं उचित समझी गई सीमा तक उत्पादन आंकड़ों पर विचार किया है। तथापि, प्राधिकारी ने इस संबंध में निर्यातक के तर्कों में कोई औचित्य नहीं पाया है तथा सामान्य मूल्य के उपर्युक्तानुसार निर्धारण की पुष्टि की है।

(ख) निर्यात कीमत

भारत औसत कारखाना द्वार निर्यात कीमत डीजीसीआईएस आंकड़ों के आधार पर निकाली गई है। चीन से निर्यातित हार्ड रेजिन प्लास्टिक ऑप्टिकल लेंस के सभी निर्यात सौदे डीजीसीआईएस आंकड़ों से लिए गए हैं। इस उद्देश्य के लिए डीजीसीआईएस आंकड़ों में से हार्ड रेजिन लेंसों को अभिज्ञात करने के लिए ऐसे विवरण वाले तथा जोड़ों में आयात किए जाने वाले लेंसों पर विचार किया गया है। समुद्री भाड़ा, पत्तन हैंडलिंग प्रभार, अंतर्देशीय प्रभार, कमीशन तथा अन्य व्ययों के संबंध में व्यापार समायोजन करने के बाद, कारखाना द्वार कीमत में समायोजन करने के पश्चात् भारत को किए जाने वाले निर्यातों की कीमत निकाली गई है। इन समायोजनों के उद्देश्य से सहयोगी निर्यातक के बीजकों में दी गई वास्तविक लागत को लिया गया है। तदनुसार कारखाना द्वार निर्यात कीमतें निम्नानुसार निकलती हैं :-

निर्यात मूल्य

प्रति हजार जोड़े

प्रति हजार जोड़े सी एंड एफ मूल्य

*** रूपए

*** यू.एस डालर

समुद्री भाड़े और अंतर्देशीय प्रभार को घटाकर
(वाई एंड एस आंकड़ों के अनुसार लिया गया)

कमीशन घटाकर ** % ***

कुल कटौतियाँ

कारखानागत कीमत

विनिमय दर

1 यू एस डालर = **** रूपए

प्रकटीकरण विवरण के उत्तर में याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि आयात आँकड़ों के आधार पर परिकलित की गयी निर्यात कीमत विषम प्रतीत होती है क्योंकि इन लेंसों के आयातों में से कुछ आयात भारतीय बाजार में विभिन्न विवरणों के अंतर्गत हुए प्रतीत होते हैं और इसलिए वास्तविक निर्यात कीमत प्राधिकारी द्वारा परिकलित की गई निर्यात कीमत से काफी कम होनी चाहिए। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत औसत निर्यात कीमत का परिकलन डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आँकड़ों के आधार पर डी जी सी आई एस के समेकित आँकड़ों में से जोड़ों में आयातित हार्ड रेजिन लेंसों को अभिज्ञात करने के बाद किया गया है और उनके पास इसकी अवहेलना करने का कोई कारण नहीं है। अतः ऊपर परिकलित की गयी निर्यात कीमतें प्रमाणित हैं।

(ग) पाटन मार्जिन

पाटन मार्जिन निकालने के लिए इस प्रकार प्राप्त किए गए भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना भारत औसत कारखानागत निर्यात कीमत से की गई है।

यू एस डालर

भारत औसत सामान्य मूल्य (परिकलित)	*****
डी जी सी आई एस के आँकड़ों के अनुसार भारत औसत निर्यात कीमत	*****
भारत औसत पाटन मार्जिन	****
पाटन मार्जिन %	7.18%

च. 2.2 चीनी ताइपेई

चूँकि चीनी ताइपेई से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा 3 प्रतिशत के न्यूनतम के स्तर से नीचे है, अतः प्राधिकारी इस देश से आयातों के लिए पाटन मार्जिन और क्षति निर्धारण का परिकलन करने का प्रस्ताव नहीं करते हैं।

छ. क्षति निर्धारण**छ.1 हितबद्ध पक्षकारों के विचार**

जांच के प्रति हितबद्ध पक्षकारों ने अन्य बातों के साथ-साथ यह निवेदन किया है कि नियमावली के अनुबंध ॥ के खण्ड (V) में यह प्रावधान है कि अन्य कारकों के कारण हुई क्षति को आयातों पर आरोपित नहीं किया जाए। इस प्रयोजन के लिए संगत माने गए कारकों की सूची में घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल थी। पाटनरोधी कानून घरेलू उत्पादकों की अक्षमता को आर्थिक सहायता देने अथवा प्रोत्साहित करने के लिए नहीं है, अतः क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ ली जाने वाली उत्पादन लागत सर्वाधिक कुशल तथा प्रभावी लागत वाले विनिर्माता की होनी चाहिए। यह निवेदन किया गया है कि इस प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया है और मै0 टेक्ट्रॉन की उत्पादन लागत को पूर्ण रूप से अंगीकार कर लिया गया है। यह अनुरोध किया गया है कि क्षति रहित कीमत के उचित निर्धारण के लिए मै0 प्रकाश इंडस्ट्रीज और मै0 इंडियन ऑप्टिक्स लि0 जैसे अन्य उत्पादकों की उत्पादन लागत का भी पता लगाया जाना चाहिए। वर्तमान एन आई पी में कथित रूप से मै0 टेक्ट्रॉन की अक्षमता तथा अधिकर्मी लागत भी शामिल है।

हितबद्ध पक्षकारों ने यह निवेदन भी किया है कि आयातों तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति, यदि कोई हो, के बीच कोई कारणात्मक संबंध उपस्थित नहीं है। जाँच परिणामों में घरेलू उत्पादकों पर आयातों की किसी मात्रात्मक अथवा कीमत प्रभाव को इंगित नहीं किया गया है। बिक्रियों के साथ ही उत्पादन तथा बिक्री भी वृद्धि हुई है। अतः जांच अवधि के दौरान आय में वृद्धि हुई है। याचिका में भी यह दर्शाया गया है कि लाभ प्रदत्ता में वृद्धि हुई है। इस प्रकार न कोई क्षति हुई है और न ही आयातों या याचिकाकर्त्ताओं द्वारा दावा की गयी क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध है। हितबद्ध पक्षकारों ने प्रकटीकरण विवरण के उत्तर में क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में अपने मत को दोहराया है।

छ.2 घरेलू उद्योग के विचार

घरेलू उद्योग के विचारों पर प्रारंभिक जांच परिणाम में विस्तार पूर्वक कार्यवाई की गयी थी और चूंकि उन्होंने इस मुद्दे पर कोई और तर्क नहीं दिया है, अतः सक्षिप्तता के लिए उन्हें यहाँ दोहराया नहीं जा रहा है। तथापि, याचिकाकर्त्ताओं ने प्रकटीकरण विवरण के अपने उत्तर में निम्नलिखित बिंदु उठाए हैं -

(क) मात्रात्मक प्रभाव

याचिकाकर्त्ताओं ने तर्क दिया है कि आयातित मात्रा, जैसा कि प्रकटीकरण विवरण में रिपोर्ट किया गया है, को इस तथ्य के कारण कम करके बताया गया है कि बहुत से बड़े आयातकों ने " सी आर 39 का आयात सी आर 39, हार्ड रेजिन, प्लास्टिक लेंसेस तथा चश्मों के लेंसेस " के वर्णन के अंतर्गत किया है जिससे आंकड़े भ्रामक हो गए हैं। उन्होंने आगे तर्क किया है कि मात्र पुनर्बिक्री बीजकों और पुनर्बिक्री उपभोक्ता के नामों से प्रमाणित होगा कि वे सी आर 39 लेंसेस हैं। सुधारात्मक प्लास्टिक लेंसों के लिए

भारतीय बाजार में तेजी से वृद्धि हो रही है परन्तु घरेलू उद्योग इस वृद्धि में भागीदारी करने में असमर्थ है। सुधारात्मक लेंसों की कुल मांग में 2000-2001 से 2001-2002 में 10,98,462 लेंसों की वृद्धि हुई है जिसमें से चीन का अधिकार 5,74,568 नगों की अत्यधिक मात्रा अथवा बाजार वृद्धि के 52 प्रतिशत पर है। घरेलू उद्योग प्रारंभिक तौर पर कीमत कटौती तथा चीनी लेंसों के पाटन के कारण घरेलू वृद्धि दर का पूरा लाभ उठाने में असमर्थ है। जहाँ चीनी आयातों में 2000-01 से 2001-02 में 48 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई, वहीं घरेलू उद्योग में वृद्धि इस दर की आधी, सटीक रूप से 23 प्रतिशत है।

(ख) घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ

याचिकाकर्ताओं ने आगे तर्क दिया है कि मुख्य रूप से बंद पड़ी एस आर एफ इकाईयों को नए मालिक, मै0 इंडियन ऑप्टैल्मिक लेंसेस मैनुफैक्चरिंग कं0, बंगलौर द्वारा वर्ष 2000 में पुनः प्रारंभ किए जाने तथा 2001 में उत्पादन को बढ़ाने के कारण घरेलू उद्योग की बिक्रियों में 1999-00 से 2001-2002 में वृद्धि हुई है। उन्होंने बढ़ते हुए घरेलू बाजार में कुछ बाजार हिस्सा प्राप्त करने के लिए भारी घाटे में भी प्रचालन जारी रखा है। याचिकाकर्ताओं के एक अन्य सदस्य, मै0 ट्रेक्ट्रॉन पोलिलेंसेस को पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में 7.3 प्रतिशत की कमी उठानी पड़ी। नई अतिरिक्त क्षमताओं के आने के बावजूद घरेलू उद्योग की कुल वृद्धि दर चीनी आयातों की वृद्धि दर से आधी बनी रही।

(ग) कीमत प्रभाव

याचिकाकर्ताओं ने अपने मत को दोहराया है कि चीनी आयातों के पहुँच मूल्य को संभवतः प्लास्टिक लेंसों, चश्मों के लेंसों आदि विभिन्न नामों के अंतर्गत प्रच्छन्न सी आर 39 को शामिल न किए जाने के कारण बढ़ा करके बताया गया है। याचिकाकर्ताओं के विचार में कीमत कटौती रिकार्ड की गयी कीमत कटौती से बहुत अधिक है। घरेलू उद्योग अपनी कार्यकुशलताओं को बेहतर बनाने तथा उत्पादन लागत को कम करने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त उन्होंने तर्क दिया है कि विवेकी भारतीय ऑप्टिशियन/उपभोक्ता धीरे-धीरे चीन के द्वितीयक श्रेणी के पाटित आयातों की तुलना में भारतीय उत्पाद की श्रेष्ठ गुणवत्ता का महत्व समझ रहे हैं और वे कुछ अधिमूल्य देने को तैयार हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रति इकाई बिक्री प्राप्तियों में वृद्धि हुई है। परन्तु तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री प्राप्ति अभी भी क्षति रहित कीमत से बहुत कम है जिससे घरेलू उद्योग को भारी घाटा हो रहा है।

छ. 3 प्राधिकारी द्वारा जाँच

पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3.1 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परवर्ती प्रभाव, दोनों की निष्पक्ष जाँच का प्रावधान है। प्राधिकारी द्वारा यह जाँच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातों में सापेक्ष रूप से अथवा उत्पादन या आयातित वस्तु के उपभोग के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के बारे में प्राधिकारी द्वारा यह जाँच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातकर्ता देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती

हो रही है अथवा क्या ऐसे आयातों के परिणामस्वरूप कीमतों में अत्यधिक हास हो रहा है या कीमत वृद्धि में अन्यथा रूकावट आई है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

चूँकि सुधारात्मक लेंसों (सी आर 39 लेंसेस) के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर अलग से विचार किया जाना अपेक्षित है, अतः घरेलू उद्योग के लिए नए सिरे से क्षति विश्लेषण किया गया है। तथापि, घरेलू उद्योग द्वारा याचिका के साथ प्रस्तुत किए गए आंकड़े सभी प्रकार के प्लास्टिक लेंसों के आयात आंकड़ों पर आधारित प्रतीत होते हैं। घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी आंकड़े भी मात्र एक याचिकाकर्ता अर्थात् टेक्नॉन पॉलिलेंसेस के आंकड़ों पर आधारित थे। नियमावली के परिशिष्ट II में निर्धारित 15 बिंदु मापदंडों के संदर्भ में डी जी सी आई एस आंकड़ों के अनुसार सुधारात्मक प्लास्टिक लेंसेस के आयात तथा घरेलू उद्योग के संयुक्त क्षति संबंधी आंकड़ों पर विचार करते हुए नए सिरे से क्षति विश्लेषण किया गया है। जहाँ तक याचिकाकर्ताओं द्वारा एकत्र किए गए चीन से आयातों संबंधी आंकड़ों की विशुद्धता का संबंध है, प्राधिकारी ने सम्पूर्ण क्षति निर्धारण अवधि के लिए डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की जांच की है और उन्होंने इसकी विशुद्धता अथवा विश्वसनीयता के संबंध में याचिकाकर्ताओं के तर्कों में कोई औचित्य नहीं पाया है। जोड़ों में आयात किए गए और डी जी सी आई एस आंकड़ों में अभिज्ञात किए गए हार्ड रेजिन लेंसों पर निर्यात कीमत के निर्धारण सहित सभी ऐसे विश्लेषणों में विचार किया गया है।

क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने क्षति तथा पाटन और क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध के निर्धारण के लिए घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के मात्रात्मक तथा कीमत प्रभाव की जाँच की है और कीमत तथा लाभप्रदता पर इसके प्रभाव की जाँच की है। चूँकि चीन से आयातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है, अतः क्षति विश्लेषण तथा कारणात्मक संबंधों के प्रयोजनार्थ उस देश से होने वाले सारे आयातों को पाटित आयातों के रूप में माना गया है।

छ.3.1 पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर उसका प्रभाव

(क) मांग, उत्पादन तथा बाजार हिस्सा

नगों की संख्या

	1999-00	2000-01	2001-02
घरेलू बिक्रियों के लिए स्थापित क्षमता	5150000	5250000	5250000
उत्पादन	1201317	3027990	3562530
कुल आयात	249392	278060	919078
घरेलू बिक्रियाँ	865869	1990956	2448400
कुल मांग (बिक्रियाँ + आयात)	1115261	2269016	3367478
संबद्ध देश (चीन) से आयात (पाटित आयात)	139178	140178	714746
अन्य देशों से आयात	110214	137882	204332
कुल मांग के % के रूप में कुल आयात	22.36 %	12.25 %	27.29 %

कुल मांग के % के रूप में चीन से आयात	12.47	6.17 %	21.22 %
कुल मांग के % के रूप में अन्य देशों से आयात	44.19	49.59	22.23
क्षमता उपयोग	लागू नहीं	58 %	68 %
उत्पादन के % के रूप में बिक्रियाँ	72.07 %	65.75 %	68.72 %
कुल मांग के % के रूप में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा	77.63 %	87.75 %	72.71%
लाभ/हानि (मिलियन रुपए में)	(10.34)	(70.91)	(58.91)

उपर्युक्त आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि चीन से पाटित आयातों की मात्रा बहुत अधिक है और इसमें पिछले वर्षों की तुलना में काफी वृद्धि हुई । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्रियों और कुल मांग में उसके हिस्से में बहुत कमी हुई है । घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 2000-01 में 87 प्रतिशत से गिर कर जांच अवधि के दौरान 72 प्रतिशत हो गया है । माल सूची में वृद्धि भी इस तथ्य से स्पष्ट है कि उत्पादन के प्रतिशत के रूप में बिक्रियाँ कम रही हैं और 1999-00 में 72 प्रतिशत से कम हो कर 2001-02 में 69 प्रतिशत हो गयी है । घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग पिछले वर्षों की तुलना में बेहतर हुआ है । परन्तु गैर किफायती रूप से कम रहा है ।

छ.3.2 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

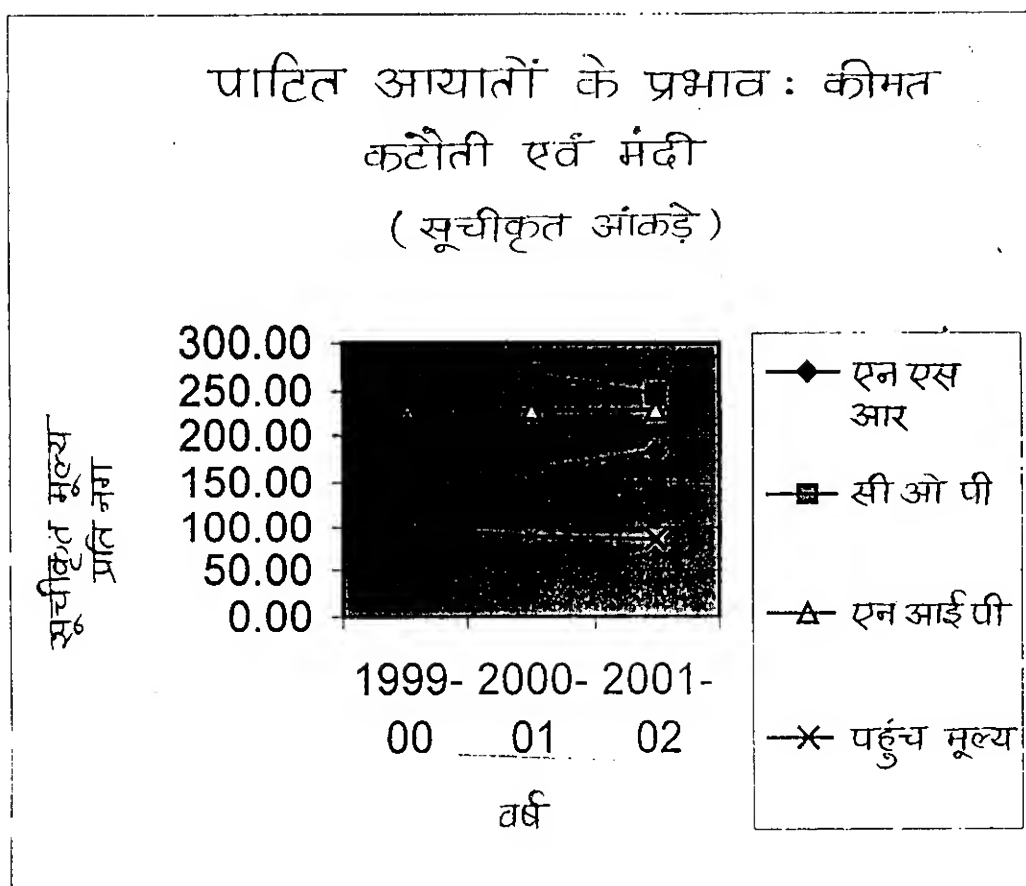
नीचे दी गयी तालिका में घरेलू उद्योग की लागत सूचना के मानकीकरण के पश्चात् लागत प्रभाग द्वारा परिकलित की गयी घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति और क्षति रहित कीमत प्रदर्शित की गयी है ।

सूचीबद्ध आंकड़े (रुपए प्रति नग)

	1999-00	2000-01	2001-02
चीन से निर्यातों का पहुँच मूल्य	100	89.0059	86.09941
अन्य देशों से निर्यातों का पहुँच मूल्य	100	91.34454	86.68067
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	100	109.9409	1225852
घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत	100	102.1129	94.33871
घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत			*****
कीमत कटौती (एन एस आर-पहुँच कीमत)	100	151.8267	196.1767
एन एस आर के % के रूप में कीमत कटौती	100	138.111	159.9276
कम कीमत पर बिक्री (क्षति रहित कीमत - पहुँच मूल्य)			*****
पहुँच मूल्य के % के रूप में कम कीमत पर बिक्री			150-170 %

कम कीमत पर बिक्री तथा कीमत कटौती के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने उपर्युक्त तालिका में दिए हुए के अनुसार सभी सौदों के भारित औसत मूल्यों की तुलना की है। उपरोक्त आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि चीन से हुए पाटित आयातों से काफी हद तक घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है और कम कीमत पर बिक्री हुई है। प्राधिकारी ने सी आई एफ निर्यात कीमत में 1 प्रतिशत उतराई प्रभार और लागू करने योग्य आधारभूत सीमाशुल्क को जोड़ने के द्वारा संबद्ध देश से आयातों के पहुँच मूल्य का परिकलन किया है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बट्टों, छूट तथा कमीशनों और भुगतान किए गए केन्द्रीय राजस्व शुल्क को छोड़ दिया गया है।

छ.3.3 पाटित आयातों के कीमत गिरावट एवं मंदी संबंधी प्रभाव:



उपर्युक्त ग्राफ यह दर्शाता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के एन एस आर में कुछ सुधार हुआ है किंतु यह अभी भी उत्पादन की लागत तथा क्षतिरहित कीमत से कम है। घरेलू उद्योग के एन एस आर में सुधार का मुख्य कारण उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन तथा उत्पाद में सुधार है। घरेलू उद्योग ने, पाटित आयातों का सामना करते हुए, अर्ध-परिष्कृत लेंसों जिनसे उच्चतर प्राप्ति मिलती है, के उत्पादन में वृद्धि की है, जबकि परिष्कृत लेंसों के हिस्से में मंदी बरकरार रही है। उत्पादन की लागत में भी क्रमिक सुधार हुआ है तथा यह मानकीय एन आई पी की ओर अग्रसर हुआ है। तथापि, जैसा कि ऊपर उल्लिखित है, एन एस आर तथा सी ओ पी में हुए सुधार का मुख्य कारण घरेलू उद्योग के उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन है, जो कि अधिकतर अर्धपरिष्कृत तथा कोटेड लेंसों में हो रहा है, जिनसे ऊँची कीमतें मिलती हैं। इसलिए उपर्युक्त आंकड़े जांच अवधि के दौरान सुधार दर्शा सकते हैं किंतु तथ्य यह है कि घरेलू उद्योग, पाटित आयातों के कारण कम कीमत के पाटित आयातों के संगत अपनी कीमतें करने के लिए अपनी उत्पादन की लागत से अपनी कीमतें कम रखकर अपने बाजार हिस्से को संरक्षित करने हेतु अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ है। आयातों से प्रतिस्पर्धा मुख्यतः निचले स्तर के कोटेड तथा गैर-कोटेड लेंसों से है जिनकी कीमतें कम रही हैं। पाटित आयातों से कीमत में मंदी के प्रभाव इस तथ्य से भी स्पष्ट हैं कि पाटित आयातों ने घरेलू उद्योग को इसकी कीमतों को इसकी पूरी लागत की वसूली करने से रोका।

घरेलू उद्योग एवं इसकी कीमतों पर कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास तथा कीमत कमी के प्रभाव तथा पाटन के मार्जिन के जरिए पाटित आयातों के मात्रात्मक एवं कीमत संबंधी प्रभावों की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के वास्तविक क्षति अथवा क्षति के खतरे, यदि कोई हो, को जानने के लिए क्षति के मानदण्डों की जांच की।

छ. 3.4. क्षति के मानदण्ड

i) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

घरेलू उद्योग का उत्पादन स्तर स्थापित क्षमता से काफी कम रहा तथा क्षमता उपयोग कम रहा है। वास्तव में प्रमुख उत्पादकों में से एक अर्थात् मै0 इंडियन आफ्थैल्मिक माल के संग्रहण से बचने के लिए प्रतिदिन केवल आधी पारी में प्रचालन कर रहा है। मै0 टेक्ट्रन के भण्डार स्तर की घरेलू बिक्री हकदारी एवं आई ओ एम एल भी काफी उच्च है। वर्ष 2001-02 के अंत में मै0 टेक्ट्रन का भण्डार स्तर वर्ष 2000-01 के अंत में रहे ***** की तुलना में ***** था। क्षमता उपयोग में सुधार का कारण प्राथमिक रूप से इसके नए स्वामी मै0 इंडियन आफ्थैल्मिक लिमि0 के द्वारा भारतीय बाजार में स्वयं को स्थापित करने के प्रयास में घाटों के संचय के बावजूद एस आर एफ इकाई का पुनः आरंभ करना है।

ii) बाजार हिस्सा एवं उद्योग की वृद्धि

घरेलू बाजार में उत्पाद की अच्छी मांग है जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि वर्ष 1999-2000 तथा 2001-02 के मध्य उत्पाद के लिए कुल मांग में लगभग 200% की वृद्धि हुई है। यद्यपि वृद्धि की संभावनाएं विद्यमान हैं क्योंकि प्लास्टिक लेंस से वर्षों पुराने कांच के लेंसों के हिस्सों को प्रतिस्थापित करना जारी है, इसलिए घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में तुलना की जा रही अवधि में

गिरावट आई है। चीन से हुए आयातों से, मांग में वृद्धि कम हो गई है जिसे पूर्ववर्ती खण्ड की तालिका में देखा जा सकता है। चीनी आयातों का हिस्सा काफी बढ़कर 12% से 22% हो गया है। घरेलू उद्योग, घरेलू वृद्धि से पूर्णतः लाभ लेने में समर्थ नहीं है जिसका कारण मुख्यतः पाटित चीनी लेंसों की कीमत में कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री है। चीनी आयात में वर्ष 2000-2001 से 2001-2002 में जहाँ 48% की वृद्धि हुई वहीं घरेलू उद्योग में इस दर के आधे से भी कम की वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान कोई वास्तविक क्षमता विस्तार नहीं हुआ है क्योंकि लाभप्रदता कम रही है।

iii) उत्पादकता

घरेलू उद्योग की उत्पादकता उस अवधि के दौरान जिसमें क्षति का विश्लेषण किया गया है बढ़ी है। इसे उद्योग के सी ओ पी में भी दर्शाया गया है। घरेलू उद्योग, उपयोग किए गए संसाधनों से कम कीमत के आयातों से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन तथा उत्पादन प्रक्रिया में सुधार के जरिए लागत कम करने तथा उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।

iv) लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

घरेलू इकाइयां भारी नकद घाटा वहन कर रही हैं जैसा कि याचिकाकर्ताओं के तुलन पत्र में प्रतिबिम्बित है। एस आर एफ द्वारा स्थापित की गई एक घरेलू इकाई भारी घाटा वहन कर चुकी है तथा आर्थिक रूप से कार्य नहीं कर पाई जिसके फलस्वरूप उसे एक बहुराष्ट्रीय उपक्रम इंडियन आथेट्मिक लेंसेज मेनफैक्च्यूरिंग को० प्राइवेट लिमि० को कम कीमत पर बेच दिया गया। यह पुनर्संगठित इकाई घटी हुई क्षमता के साथ कार्य कर रही है। टैक्ड्रन पालीलेंसेज लिमि० ऋण बोझ को कम करने का प्रयास कर रही है तथा वित्तीय संस्थानों के लिए एक गैर निष्पादनीय परिसम्पत्ति के रूप में कार्य कर रही है। टाटा के एक उपक्रम, फोर्ब्स गोकाक लि० ने औरंगाबाद में एक प्लास्टिक लेंस विनिर्माण सुविधा स्थापित की थी तथा जो 700 मिलियन रुपये के संचयी घाटे को वहन करने तथा लगभग 250 व्यक्तियों के बेरोजगार बना देने के बाद बंद हो गई। तथापि, उत्पाद में सुधार की प्रक्रिया तथा उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन के जरिए घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान अपने घाटे में मामूली कमी लाने में समर्थ रहा है किंतु घाटा अभी भी काफी है क्योंकि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कीमत दमनात्मक एवं मंदीकारक प्रभावों के कारण निवल बिक्री वसूली उत्पादन लागत से काफी कम रही है।

v) रोजगार एवं मजदूरी

जैसा कि ऊपर वर्णित है अतीत में कुछेक इकाइयों के बंद जाने के कारण वास्तविक रोजगार में कमी आई है, यद्यपि याचिकाकर्ताओं की तुलना में, क्षति जांच अवधि के दौरान रोजगार घाटा मामूली रहा है। तथापि, रोजगार एवं मजदूरी सरकार के श्रम कानूनों द्वारा शासित किए जाते हैं तथा यदि इकाइयां रुग्ण अथवा बंद नहीं होती हैं तो पाटित आयातों के कारण उन पर इसका प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ सकता। तथापि, यह तथ्य, कि आई ओ एम एल सरीखी इकाइयां प्रतिदिन

एक पारी से भी कम का प्रचालन कर रही हैं, यह दर्शाता है कि उद्योग को रोजगार घाटे का संभावित खतरा है।

vi) निवेश पर आय एवं पूंजी जुटाने की क्षमता

उद्योग को सभी तीन वर्षों में घरेलू बिक्री में हुए नकद घाटे के कारण निवेश पर ऋणात्मक आय हुई है। जिसके फलस्वरूप आई ओ एम एल के मूल संवर्धक एक बहुराष्ट्रीय उपक्रम इंडियन आप्थेल्मिक लेंसेज मैन्यूफैक्चरिंग को 0 प्राइ0 लिमि0 की इकाई की कम कीमत पर बिक्री के जरिए उद्योग से बाहर हो गए हैं। यह पुनर्संगठित इकाई घटी हुई क्षमता के साथ कार्य कर रही है ट्रेक्टन पालीलेंसेज लिमि0 ऋण बोझ को कम करने का प्रयास कर रही है तथा वित्तीय संस्थानों के लिए एक गैर-निष्पादनीय परिसम्पत्ति के रूप में कार्य कर रही है।

vii) निवेश

इस उत्पाद प्रखण्ड में कोई महत्वपूर्ण नया निवेश तथा क्षमता वृद्धि नहीं हुई है क्योंकि कीमतें कम रही हैं तथा लाभप्रदता नकारात्मक रही है।

viii) पाटन की मात्रा तथा कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

बाजार में कीमतें, उत्पाद की मांग तथा गुणवत्ता से इतर, अन्य किसी भी कारक से प्रभावित नहीं हो रही हैं। घरेलू उद्योग कीमतों में निचले स्तर प्रखण्ड में कटौती करने में सक्षम रहा है तथा इसने भारी घाटे के बावजूद व्यापार में बने रहने के लिए उत्पाद मिश्रण में परिवर्तन किया। पाटन का निर्धारित मार्जिन वास्तविक है तथा न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है।

छ.4 अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध

हितबद्ध पक्षकारों में से किसी ने भी घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा सकने वाले किसी अन्य कारक के बारे में प्राधिकारी को सूचना नहीं दी है। तथापि, अन्य कारकों को अभिज्ञात करने एवं अलग करने तथा ए डी ए की गैर-आरोपण धारा के तहत पाटित आयातों से हुई क्षति के लिए उन कारकों को जिम्मेदार न मानने के लिए निम्नलिखित कारकों की, जहां तक संभव हो, प्राधिकारी द्वारा जांच की गई।

i) अन्य स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

अन्य स्रोतों से हुई आयातों की मात्रा पूर्ववर्ती तालिका में दर्शाई गई है। तथापि, चीन से पाटित आयात, कुल आयातों का लगभग 75% हिस्सा हैं तथा इसलिए इनका कीमतों पर अत्यधिक

प्रभाव पड़ा है। अन्य स्रोतों से हुए आयात, चीनी आयातों की तुलना में थोड़ी सी उच्च कीमत पर हुए हैं तथा इनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है।

ii) मांग में कमी और/अथवा उपभोग की प्रवृत्ति में परिवर्तन

संबद्ध वस्तु की मांग बढ़ रही है तथा घरेलू बाजार में मांग में कमी के कोई चिह्न नहीं देखे गए हैं। इसके अतिरिक्त कांच के लेंसों की तुलना में प्लास्टिक के लेंसों को अधिक तरजीह मिल रही है तथा इसीलिए संबद्ध उत्पाद के प्रति उपभोग की प्रवृत्ति अनुकूल है तथा इसलिए घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक कारण नहीं हो सकता है।

iii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंध संबंधी व्यवहार तथा प्रतिस्पर्धा

संबद्ध वस्तु शुल्क मुक्त आयात योग्य है तथा घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंध संबंधी व्यवहार लागू नहीं है। चूंकि याचिकाकर्ता देश में क्षमता का लगभग 100% निर्मित करते हैं, इसलिए उनके मध्य कोई अनुचित प्रतिस्पर्धा नहीं है। चीनी आयातों की तुलना में अन्य स्रोतों से हो रहे व्यापार की मात्रा कम तथा बिखरी हुई है तथा साथ ही इसी प्रखण्ड के लिए कीमतें भी पर्याप्ततः तुलनीय हैं। इसलिए भारतीय बाजार के लिए विभिन्न विदेशी उत्पादकों के मध्य कोई अनुचित प्रतिस्पर्धा नहीं है।

iv) प्रौद्योगिकी का विकास और निर्यात निष्पादन

घरेलू उद्योग, विशेष रूप से मै0 टेक्स्टून और मै0 आई ओ एम एल के पास अत्याधुनिक, पूर्णतया स्वचालित संयंत्र हैं और ये अति उच्च गुणवत्ता की संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। चीनी विनिर्माताओं द्वारा अपनायी गई प्रौद्योगिकी की तुलना में इन घरेलू विनिर्माताओं के पास बेहतर प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रिया है यद्यपि प्रयोग की गई कच्ची सामग्री वही है। इसलिए प्रौद्योगिकी कारक को क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। मै0 टेक्स्टून एक निर्यात अभिमुखी इकाई है और अपने निर्यात दायित्वों का निर्वहन कर रही है। मै0 आई ओ एम एल भी हाई-एंड खण्ड में अपने विदेशी सम्पर्कों के जरिए बड़ी मात्रा में निर्यात कर रहा है। इसलिए निर्यात खंड में निष्पादन के लिए घरेलू उद्योग की क्षति को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता है।

v) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

घरेलू उद्योग का कुल उत्पादन और क्षमता उपयोग मन्द कीमतों के कारण निम्न रहे हैं। तथापि, घरेलू उद्योग की नियत लागत और अतिरिक्त व्यय (एस जी ए व्यय, ब्याज भुगतान/वित्त

लागत) बहुत ऊँचे रहे हैं जिससे आंशिक रूप से उद्योग को क्षति हो रही है। परन्तु यदि घरेलू उद्योग पूरी क्षमता उपयोग प्राप्त करने में सक्षम रहा होता तो प्रति इकाई एस जी ए व्यय और नियत लागत को वास्तविक रूप से कम किया जा सकता था। तथापि, क्षतिरहित कीमत के अपने निर्धारण में उत्पादन लागत को मानकीकृत करते समय प्राधिकारी ने एक इष्टतम क्षमता स्तर को अपनाकर इन उच्च लागत तत्वों के प्रभावों को निष्प्रभावी कर दिया है और इसलिए इन अक्षमताओं के प्रभावों को विलुप्त कर दिया गया है और पाटित आयातों से हुई क्षति के लिए इनको जिम्मेदार नहीं माना गया है।

छ.5 घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत का निर्धारण

प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई और प्राधिकारी द्वारा सत्यापित सूचना के विस्तृत विश्लेषण और परीक्षण के पश्चात संबद्ध वस्तुओं के लिए एक क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया।

जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्षों की अवधि की लिए उत्पादन और उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित सभी संगत कारकों संबंधी लागत सूचनाएं विधिवत प्रपत्र में मांगी गई थीं। सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तुओं की वास्तविक उत्पादन लागत को प्रयोग किया गया है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत के निर्धारण में प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त कच्ची सामग्री, उसकी खपत, उपयोगी वस्तुओं अर्थात् बिजली, पानी आदि की लागत, ब्याज लागत, श्रम लागत, मूल्य ह्रास लागत और बिक्री और प्रशासनिक व्यय सहित सभी संगत कारकों की विस्तृत जांच और विश्लेषण किया है। संयंत्र में किए गए निवेश और क्षमता उपयोग जैसे कारकों की भी लागत विश्लेषण में जांच की गई है। इन सभी कारकों का लेखा और उत्पादन और वित्तीय विवरणों की मूल पुस्तकों के संदर्भ में निर्धारण किया गया है। घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण याचिकाकर्ता के द्वारा लगाई गई पूंजी पर हुए तर्कसंगत लाभ मार्जिन के उत्पादन की लागत में जोड़ने से किया गया है।

तदनुसार, घरेलू उद्योग के लिए भारित औसत क्षतिरहित कीमत का प्राधिकारी द्वारा निर्धारण रू० ***** प्रति प्लास्टिक ओपथलमिक लेंसेज के रूप में किया गया है।

छ. 6 क्षति और क्षति मार्जिन की मात्रा

क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए प्राधिकारी द्वारा निर्धारित की गई क्षतिरहित कीमत की तुलना निर्यातों के पहुँच मूल्य से की गई है। चीन से निर्यातों की भारित औसत पहुँच कीमत निम्नानुसार है :

क्षति मार्जिन गणना	
रु० प्रति 1000 जोड़े	
डी जी सी आई एस के आंकड़ों के अनुसार भारित औसत सी एंड एफ कीमत और पहुँच अधिभार	1% *****
आकलनयोग्य मूल्य और मूल सीमाशुल्क	30% *****
भारित औसत पहुँच कीमत	20440.00
एन आई पी	*****
क्षति मार्जिन	लगभग 150-170%

पहुँच मूल्यके % के रूप में अभिव्यक्त क्षति मार्जिन लगभग 150-170% परिकलित होती है और इसको पर्याप्त पाया गया है।

छ. 7. क्षति और कारणात्मक संबंधी संबंधी निष्कर्ष

- उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि
- चीन से आयात की गई संबद्ध वस्तुओं का पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है;
 - घरेलू उद्योग ने क्षमता उपयोग, निम्न बाजार हिस्सा और नकद घाटे के रूप में वास्तविक क्षति उठाई है क्योंकि चीन से पाटित आयातों की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत में कमी और मन्दी प्रभावों के कारण संबद्ध वस्तुओं की कीमतें मन्द रहती हैं और प्राधिकारी द्वारा परिकलित किया गया क्षति मार्जिन भी सकारात्मक है;
 - उच्च नियत लागत और घरेलू उद्योग के एस जी ए व्यय के सिवा कोई अन्य ज्ञात कारक नहीं पाया गया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। नियत लागत और एस जी ए व्ययों को निर्यातक के लिए प्रस्तावित परिकलित सामान्य मूल्य में क्षतिरहित कीमत में मानकीकृत किया गया है। अतः इस कारक से हुई हानि के लिए चीन से हुए पाटन को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।
 - पाटित आयातों और घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति में एक स्पष्ट कारणात्मक संबंध है और अन्य कारकों द्वारा पहुँचाई गई क्षतियों को घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं माना गया है। इस प्रकार चीन से पाटित कीमतों पर निर्यातों की मात्रा और कीमतों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

ज. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनःस्थापित हो सके, जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपायों से संबद्ध देश से आयात किसी भी प्रकार प्रतिबंधित नहीं होंगे, और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद एक ऐसा उत्पाद है जिसे उपभोक्ताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से प्रयोग किया जाता है और यह महत्वपूर्ण सीमा तक आगे प्रसंस्करण के लिए नहीं जाता है। यह मानते हुए कि यद्यपि पाटनरोधी उपायों से उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद के कीमत स्तर प्रभावित हो सकते हैं परन्तु इससे अनुप्रवाहगामी उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद की प्रतिस्पर्धात्मकता जैसा कोई अन्य प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि इस मामले में ऐसा कोई उद्योग विद्यमान नहीं है। तथापि चश्मे बनाने वालों का एक विशाल मध्यवर्ती नेटवर्क विद्यमान हैं और लेंसों की लागत और तैयार चश्मों में काफी मार्जिन है। इसलिए ऐसे किसी उपाय का उपभोक्ताओं पर सीमान्त प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभों को समाप्त किया जा सकेगा और घरेलू उद्योग के ह्रास को रोका जा सकेगा और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्प उपलब्ध होने में सहायता मिलेगी।

संबद्ध वस्तु के आयातकों अर्थात् मध्यवर्ती व्यापारियों ने तर्क दिया है कि पाटनरोधी उपायों से इन लेंसों के कूरियर और अन्य साधनों के जरिए इस उत्पाद की प्रकृति और भार के कारण अवैध आयातों को बढ़ावा मिलेगा और इससे घरेलू उत्पादकों और उपभोक्ताओं के हित पर भी हानिकारक प्रभाव पड़ेगा। तथापि, प्राधिकारी का यह विचार है कि पाटनरोधी कानून का उद्देश्य घरेलू उद्योग की अनुचित व्यापार से सुरक्षा करना है न कि अवैध व्यापार से जिसके लिए विभिन्न विधिक और प्रशासनिक तंत्र मौजूद हैं।

(झ) निष्कर्ष

उठाए गए मुद्दों और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों के माध्यम से या अन्य प्रकार से प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों, जैसा कि उपर्युक्त जांच परिणामों में रिकार्ड किया गया है, की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

- i. संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
- ii. घरेलू उद्योग ने वास्तविक क्षति उठाई है।
- iii. घरेलू उद्योग को क्षति संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव दोनों के कारण हुई है।

संबद्ध देश से पाटन की मौजूदगी, सामान्य उत्पाद घरेलू उद्योग की क्षति और पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, जैसा कि इसमें पुष्टि की गई है, संबंधी निष्कर्ष पर पहुँचने के पश्चात प्राधिकारी 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की अनुसूची 1 सीमाशुल्क कोड 9001.50 के अंतर्गत वर्गीकृत और अध्याय 90 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयात पर नीचे वर्णित विधि एवं ढंग में पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करना आवश्यक मानते हैं।

प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन के समान निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण होने वाली क्षति को दूर किया जा सके। उत्पाद की प्रकृति और व्यापक कीमत विभेदीकरण पर विचार करते हुए प्राधिकारी की यह मत है कि भारत में आयात पर संबद्ध वस्तु के आकलन किए गए मूल्य पर यथामूल्य आधार पर पाटनरोधी शुल्क लगाना पाटित आयातों के प्रभावों को निष्प्रभावी बनाने के लिए एक उचित उपाय होगा। तदनुसार, यह सिफारिश की गई है कि सीमाशुल्क टैरिफ के सीमाशुल्क उपशीर्ष 9001.50, अध्याय 90 के अंतर्गत संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से यथामूल्य आधार पर, जैसा कि नीचे दी गई तालिका के कॉलम 3 में दर्शाया गया है, निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए।

क्र० सं०	उप शीर्ष या टैरिफ मद	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क (%)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1	9001.50	करेक्टिव प्लास्टिक आपथैल्मिक लैंसेज	प्लानो रंगीन आपथैल्मिक लैंसेज के अलावा	चीन जन० गण०	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.18%
2	9001.50	करेक्टिव प्लास्टिक आपथैल्मिक लैंसेज	प्लानो रंगीन आपथैल्मिक लैंसेज के अलावा	कोई देश	चीन जन० गण०	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	7.18%

उपर्युक्त के अधीन, प्राधिकारी दिनांक 8 अगस्त, 2003 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

इस आदेश के विरुद्ध अपील उपर्युक्त अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

प्राधिकारी, उपर्युक्त अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी किए गए सावजनिक नोटिसों के अनुसार निश्चयात्मक उपाय, जैसा कि इसमें सिफारिश की गई है को जारी रखने, इसमें संशोधन करने अथवा समाप्त करने संबंधी जरूरतों की समय-समय पर समीक्षा कर

सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी किसी समीक्षा का कोई अनुरोध तब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक कि वह इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के अन्दर हितबद्ध पक्षकार द्वारा दायर न किया जाए।

अभिजित सेनगुप्ता, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)
(Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties)

NOTIFICATION

New Delhi, the 25th February, 2004

FINAL FINDINGS

Sub. : Anti-Dumping Investigation concerning imports of Plastic Ophthalmic Lenses from People's Republic of China and Chinese Taipei.

No. 14/16/2002-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof:

A. PROCEDURE

The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

i) The Designated Authority (hereinafter also referred to as Authority), under the above Rules, received a written application from M/s Techtran Polylenes Limited, Hyderabad, a member of Indian Plastic Ophthalmic Lenses Association (IPLA), Karnataka (hereinafter referred to as petitioner) on behalf of the domestic industry, alleging dumping of Plastic Ophthalmic Lenses (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from People's Republic of China and Chinese Taipei (hereinafter referred to as subject countries). The petition is also supported by M/s Indian Plastic Ophthalmic Lenses Association whose other members are M/s Indian Ophthalmic Lenses Manufacturing Co. Pvt. Ltd., Karnataka and M/s Prakash Plastic Industries (Madras) Pvt. Ltd., Chennai.

ii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the petitioner issued a public notice dated 27.8.2002 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods classified under Customs Code 9001.50 Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 originating in or exported from the subject countries in accordance with the sub-Rule 5(5) of the Rules.

iii) The Authority sent a questionnaire to elicit relevant information to the following known exporters/producers, in accordance with the Rule 6(4):

M/s Wenzhou East Optical Glasses Co. Ltd., PR China
M/s Wenzhou Wuzhou Group Co. Ltd., PR China

M/s Wenzhou Mingda Optical Glasses Co. Ltd., PR China
M/s Bin Shyh Enterprises Co. Ltd., Chinese Taipei
M/s Daily Glasses Enterprise Co. Ltd., Chinese Taipei
M/s Y & S (Tianjin) Industries Ltd., PR China

iv) Response/information to the questionnaire/notification was filed by the following exporters/producers:-

M/s Wenzhou East Optical Glasses Co. Ltd., PR China
M/s Wenzhou Wuzhou Group Co. Ltd., PR China
M/s Wenzhou Mingda Optical Glasses Co. Ltd., PR China
M/s Y & S (Tianjin) Industries Ltd., PR China

None of the exporters/producers from Chinese Taipei responded to the initiation notification.

v) The Authority conducted spot verification and investigation of the cost data of the domestic industry to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the petitioner.

vi) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2001 to 31st March 2002 i.e. the period of investigation (POI). For the purpose of determination the authority analyzed data from 1st April 1999 to 31st March 2002 (Injury Period)

vii) On the basis of preliminary investigation and evidence the Authority notified its Preliminary Findings vide Notification Number 14/16/2002-DGAD Dated 11.08.2003.

viii) The Authority forwarded copies of the Preliminary Findings to known interested parties, and the governments of the exporting countries who were requested to furnish their views, if any, on the Preliminary Findings within forty days.

ix) The Authority also forwarded copy of the Preliminary Findings to the Embassies/High Commissions/Representatives of subject countries in New Delhi with a request to furnish their views on the Preliminary Findings.

x) The Authority held a public hearing on 13th October 2003 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, importers and exporters from subject countries. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions thus received from interested parties have been considered by Designated Authority in these finding;

xi) The Authority also conducted spot verification of the Cooperating Exporter's production facilities and data in China to the extent possible and the verified data has been taken into account for the final determination.

Xii) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7);

XIII) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties vide general disclosure and confidential disclosures to parties involved dated 22nd January 2004. Comments to the disclosure received from the interested parties have also been duly considered in these findings;

XIV) **** In the Notification represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by Authority under the Rules.

For the purpose of brevity the issues already discussed in the preliminary findings of the authority are not repeated here.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

B.1 The product under consideration is Plastic Ophthalmic Lenses, which are used in spectacles to correct Eye Vision of Human beings. These lenses are imported in finished, Uncut form, ready to mount in spectacle frames. The ITC (HS) classification of the products is 9001.50

B.2 Views of Petitioners, exporters, importers and other interested parties

B.2.1 Petitioner's views

The imported product is Plastic Ophthalmic Lenses, which are used in spectacles to correct Eye Vision of Human beings. These lenses are imported in finished, uncut form, ready to mount in spectacle frames. The ITC (HS) classification of the products is 9001.50 which attract peak Customs duty of 30% (2002 budget). The lenses are made out of Bis Allyl Di-carbonate, generically known as CR-39 with Refractive Index of 1.498 and Abbe number of 50 plus. These lenses are basically modern day lenses substituting age old, glass lenses. It has been clarified by the petitioners that the lenses meant for protective purposes and sunglasses are outside the scope of the present petition and investigations.

Plastic Ophthalmic Lenses are primarily produced with two raw materials viz. Bis Allyl Di-carbonate (generically known as CR-39) and Polymethyl Methacrylate (PMMA). In addition to these two raw materials, there are other materials also which can be used for production of Plastic Ophthalmic Lenses. Plastic Ophthalmic Lenses produced with any raw material whether CR 39, PMMA or other, are within the scope of the product under consideration. The petitioner produces Ophthalmic Lenses using CR-39. Plastic Ophthalmic Lenses are modern day lenses substituting age old, glass lenses, which would break easily on impact.

Plastic Ophthalmic Lenses produced with Polymethyl Methacrylate (PMMA) or acrylic lenses used for corrective purposes are not different from CR-39 lenses used for corrective purposes. It has been argued by various interested parties that

acrylic lenses imported from the subject countries were not meant for corrective purposes. Petitioner has disputed the claim and requested the Authority to direct the concerned importers to file relevant import documents and other information as is required to be provided in accordance with the Importers Questionnaire. Petitioners claim that if this data were collected, it would be seen that these importers have declared that the lenses imported were meant for corrective purposes. This becomes obvious from the fact that the lenses imported for protective purposes attract countervailing duties while corrective lenses can be imported without payment of countervailing duties. Further, the importers have resold the material in the market. The importers and resellers may be directed to disclose the invoices of such resale and establish whether the exporter's invoice, importer's invoice and reseller's invoice show that the lenses imported were meant for protective purposes or corrective purposes.

The petitioners manufacture Single Vision and Bifocal lenses, similar to the imported products from Chinese Taipei and China. The member companies also produce semi-finish products of Single Vision and Bifocal, even though the volumes are small.

B.2.2 Views of the Exporters

a) M/s Y&S(Tianjin) Ltd. P.R. of China

M/s Y&S Industry, one of the responding exporters of CR39 lenses from China have contended that the product under consideration is far too wide as it includes within its purview, other types of lenses, which are not manufactured by the domestic industry. As the Indian producers manufacture only CR -39, there exists domestic industry only for this item. Therefore, for purposes of like article and causal injury, the investigations are required to be confined to CR 39 and can not include other types of lenses. It may be relevant to mention that acrylic lenses and CR 39 are distinguishable with regard to the process of manufacture and the principal raw material. To the best of their information, none of the domestic producers have ever produced acrylic lenses and also do not have the facility to do so. The investigation is therefore; to be confined to CR 39 and acrylic lenses are required to be excluded for the purpose of standing and injury.

b) M/s Wenzhou East Optical Glasses Co., Ltd, M/s Wenzhou Mingda Optical Glasses Co., Ltd., and M/s Wenzhou Wuzhou Group Imp. & Exp. Co., Ltd., of PR China.

These exporters from China are primarily manufacturers/ exporters of PMMA lenses. They have submitted that as per the Petition, the Petitioner has alleged that the imported product is "Plastic Ophthalmic Lenses" which are used in spectacles to correct eye vision of human beings. Further, the Initiation Notification also describes the product involved in the present Investigation as "Plastic Ophthalmic Lenses (also referred as "subject goods" hereinafter) originating in or exported from the subject countries and are classified under Chapter 90 of the Custom Tariff Act (Custom head 9001.50). Plastic Ophthalmic lenses are used in spectacles to correct eye vision of human beings. These lenses are in finished uncut form, ready to

mount in spectacle frame. The lenses are made out of Bis Allyl Di-carbonate, generally known as CR-39 with Refractive Index of 1.498 and Abbe number of 50 plus".

These exporters from China have contended that as per the Petition the scope of the subject goods was limited to Plastic Ophthalmic Lenses used in spectacles to correct eye vision of human beings. However, the Authority has wrongly broadened the scope of the present Investigation to include non-prescriptive and non-corrective lenses.

The lenses manufactured from raw material PMMA Polymethyl Methacrylate (hereinafter referred to as "**PMMA**") are used for protective and/or cosmetic use only and not for prescriptive, corrective and therapeutic purposes. The subject goods produced from CR-39 are called Hard Resin Lenses while those produced from PMMA are called Acrylic Plastic Lenses. The said Acrylic Plastic Lenses, are neither technical nor commercial substitutes of the subject goods produced by the Petitioner and thus the category of subject goods manufactured from PMMA ought to have been excluded from the scope of the present Investigation.

It has also been submitted that M/s Wenzhou East, Mingda and Wuzhou have provided the Hon'ble DA with actual samples of Acrylic Plastic Lenses (PMMA) during the course of the present Investigation and also at the time of Public Hearing. Even as per the test of a layman, the said samples clearly depict the dissimilarities in physical properties and characteristics between the Acrylic Plastic Lenses (PMMA) produced and exported by East, Mingda and Wuzhou and the Hard Resin Lenses (Cr-39) manufactured by the Petitioner.

Further, the Hon'ble DA has wrongly held that Plastic Lenses are imported under Custom Head Classification No. 9001.50 and hence lenses manufactured out of PMMA can also be used as prescriptive lenses to compete with lenses made out of CR-39. It is submitted that although the lenses manufactured out of PMMA and CR-39 are both classified under the Custom Head Classification Number 9001.50 – Spectacle Lenses of other material, they are completely different products, having different properties, raw materials, manufacturing process and end use.

That "Plastic Ophthalmic Lenses" covers very broad range of products which are made out of different raw materials such as, PMMA (Polymethyl Methacrylate), PC (Polycarbonate), CAB (Cellulose-Aceto Butyrate) and CR-39 (Bis Allyl Di-Carbonate) and all are classified under the Custom Head 9001.50 "Spectacle Lenses of other material" as they are not glass lenses and cannot be classified under 9001.40 "Spectacle Lenses of Glass". Thus even though they are all classified under the Custom Head 9001.50 all the said products are produced from different raw materials, are completely different and/or not commercially substitutable and used for different applications, considering the aspects such as use of raw material manufacturing process, property etc. In view of the above, it is submitted that the Custom Heads cannot be used as a standard to identify the "like Article" and the same are only indicative and cannot be the basis of the Investigation.

B.2.3 Views of Importers and other Interested Parties

Federation of all India Optical Associations (FAIOA); M/s R. K. Optical Ltd.; and M/s Enterprise Trading Company; and M/s Indian Optics have responded to the petition as interested parties and submitted their written submissions.

M/s Indian Optics Ltd., which has claimed to be a manufacturer of CR 39 ophthalmic lenses and had started manufacture of C 39 during the period of investigation have also joined as an interested party and also by virtue of this fact, they have claimed to form part of the domestic industry. They have partially supported the petition, while opposing the quantum of duty and inclusion of PMMA and other specialty lenses within the scope of the petition.

The views of the importers and other interested parties have been summarized as follows:

That CR 39 is manufactured from ADCA/NS 200 whereas Acrylic Lenses are manufactured from Poly Methyl Metacrylate (PMMA). CR 39 is manufactured through casting process, whereas acrylic lenses are manufactured by a process of injection moulding. The injection moulding process consists of heating plastic granules and the raw material mix, and placing this in the mould. The entire process of manufacture takes only a matter of minutes. In the casting process, the main material mix is placed in certain moulds having rubber gaskets which are then placed in ovens for polymerization over a period of 8 to 16 hours. As a consequence, with the injection moulding process large quantities of identical products can be produced in a short time. Whereas, in the casting process, small quantities of different types of lenses can be manufactured. The casting process is therefore, inherently more suitable for corrective lenses;

That in the casting process, first moulds are prepared, and then the lenses are cast. Therefore, only smaller quantities of lenses can be manufactured. The moulds used in the casting process are of glass and cost less than Rs200/- a piece, whereas in the injection moulding process, the cost of the mould is not less than Rs2 to 3 lakhs per-piece. On the other hand Injection moulding process has certain fixed costs. But a large quantity is necessarily to be manufactured. This technology (injection moulding) is therefore not suitable for manufacture of corrective lenses in smaller quantities;

That there is a substantial difference in cost of production not only on account of the process of manufacture but the cost of the principal raw material. NS 200 is priced at about US \$4.50 per Kg. whereas the price of PMMA is only US \$1.5 kg. Moreover, the associated costs of PMMA are lower as it is in a granular form and can be stored in ordinary bags, whereas the monomer for CR 39 is in liquid form and can only be stored in controlled conditions. Different raw material and process results in a very different end product – the cost of CR 39 is significantly higher than that of acrylic lenses, as they are very different products and are not having commercial and technical substitutability.

That corrective lens are commonly used for 800 powers – the criteria being astigmatic plus or minus / non-astigmatic plus or minus, prismatic lenses, bi-focal round / bi-focal D shape, spherical, cylindrical numbers, etc. Since there are many variables for corrective lenses, they can not be manufactured by the injection moulding process.

That lenses have lower resistance to scratches and are breakable – making them unsuitable for use as corrective lenses, which require regular wear. CR 39 has better resistance to scratches, lower impact of dust, and longer life, which make them suited for corrective lenses. The critical difference is on account of scratch resistance, stress cracking resistance, solvents and chemical resistance, welding sparks resistance, plasticizer migration resistance, ageing resistance, gamma radiation resistance. Therefore, the different properties affect the ultimate use and substitutability of the two products;

That the optical proprieties of CR 39 are superior to the optical properties of acrylic lenses. The main difference arises due to a lack of uniformity in the refractive index of acrylic lenses. As against this, there is a great homogeneity in the refractive Index. – CR 39 properties ideally suited for corrective lenses.

That as sunglasses do not need stringent optical properties and the life cycle for sunglasses (non-corrective lenses) is shorter due to fashion and cosmetic value, acrylic lenses are more suitable – acrylic lenses suitable for non-corrective applications.

That CR 39 lenses are used for application which require better optical quality, such as camera filters, navigation instruments, welding shields, instrument windows, including scientific, aerospace and nuclear applications, etc. Acrylic lenses are used for applications requiring less optical quality such as automobile taillights, meter display panel covers, nameplates, lamp covers, aquariums, sunglasses ornamental items and parts. Difference in properties – superior properties of CR 39 *vis a vis* acrylic and higher cost of manufacture, make CR 39 optimal for high end applications, that is applications which require superior optical properties, whereas acrylic are optimal for lower end applications.

That the customs tariff heading is only indicative and does not in any way define the scope of the investigations. The Customs Tariff is based on the Harmonized System Nomenclature devised by the World Customs Organization. The scope of the headings have not been prepared keeping in regard the likeness of articles as defined under Section 9A of the Act;

That if a product, which is imported, is not manufactured by the domestic industry; it must be examined whether the product manufactured by the domestic industry is a 'like article' to the product under consideration. The aspect of like article is required to be considered in the context of the critical parameters which define CR 39 – whether such critical parameters are equally present with regard to acrylic lenses and specialty lenses or exclusion is warranted;

For the aforesaid reasons, it would be erroneous to treat CR 39 as a like article to acrylic lenses. The petitioners have agreed in principle during the Public Hearing that tinted Plano lenses do not come under the purview of their petition.

Exclusion of Specialty Lenses

The interested parties have further argued that the domestic manufacturers do not manufacture lenses having special type of coatings such as:

Anti-reflection multi-coating – Normal lenses have the ability to transmit light to the extent of 92%, after the application of such coating this ability is increased to 99%, providing vision almost near to that of the naked eye.

Hydrophobic coating – By this coating, the lenses repel water and consequently dust does not stick to the lenses, reducing the chances of scratches.
Anti-EMI coating – By this coating Electro magnetic interference generated from computers, television, microwave ovens, etc. is eliminated.

Since the domestic industry has neither manufactured, nor has the facilities to manufacture the aforesaid lenses, they are required to be excluded from the scope of product under consideration.

B.3 Examination by the Authority

Authority has carefully considered the views of the petitioners, exporters and importers, and other interested parties on the issue of the product under consideration and the like article. The Authority notes that the investigation was initiated for Plastic Ophthalmic lenses originating in or exported from the subject countries classified under Customs Head 9001.50. These lenses are used in spectacles to correct eye vision of human beings. The lenses are made out of Bis Alloy Di-carbonate, generally known as CR-39 with Refractive Index of 1.498 and Abbe number of 50 plus. However, the initiation notification also stated that the investigation covers all type of Plastic Ophthalmic lenses. The purpose of covering all plastic lenses was to identify the domestic as well as the foreign 'like products' for the purpose of investigation for imposition of duty.

For the purpose of this investigation the product under consideration was 'Plastic Ophthalmic lenses used for corrective or therapeutic uses only' as mentioned in the original petition as well as the initiation notification. The moot point for the Authority was to decide the domestic and the foreign like products for the purpose of inclusion or exclusion within the scope of the investigation of dumping and injury.

The investigation has revealed that there are two distinct categories of lenses manufactured out of various plastic materials (CR-39, and PMMA being two major materials) depending upon their usage i.e. Corrective, prescriptive or therapeutic use, and non-corrective (i.e., protective lenses and sunglasses). The authority notes that lenses manufactured by the domestic industry are clearly for corrective purpose only and therefore, for the purpose of determination of the domestic, as well as

foreign like products, only the corrective lenses are required to be considered. The petitioners themselves have confirmed that their intention is not to include the non-corrective or protective lenses in the scope of this investigation. Now the issue to be decided is whether corrective lenses can be manufactured out of PMMA and other plastic materials (other than CR-39) and if so, can they technically and commercially substitute the C R-39 lenses manufactured by the domestic industry.

In this regard, Authority turns to Article 2.6 of the Agreement on Antidumping. As per Article 2.6 of the Agreement read with Rule 2 (d) of Antidumping Rules "the term 'like article' shall be interpreted to mean a product which is identical, i.e. alike in all respects to the product under consideration or in the absence of such a product, another product which, although not alike in all respects; has characteristics closely resembling those of the product under consideration". Therefore, while considering whether an article is a like article compared to the product under consideration the Authority has to look at their technical and physical characteristics and technical and commercial substitutability.

The Authority also notes that the spot verification conducted by the Authority in the manufacturing facilities of the exporters in China revealed that at least one of the manufacturers/exporter i.e. M/s Wenzhou East Optical Co, Wenzhou produces corrective lenses made out of PMMA through the injection moulding process. These lenses are being used for making reading lenses and other corrective spectacles for their domestic market as well as other developing country markets. Therefore, the contention of the exporters, importers and other interested parties that the PMMA lenses are used only for non-corrective and protective purpose and not suitable for corrective purpose is not correct. The interested parties have brought to the notice of the Authority that in the earlier cases (Acyclic Alcohol), the Authority had examined the following critical parameters to determine the like articles: i) Technical and Commercial substitutability; ii) Function and uses of the products; iii) Resemblance of the physical and/ or chemical characteristics; iv) User's perception of switching over from one product to another; v) Similar production process; and vi) End product substitutability. Authority has carefully examined these aspects in deciding the issue of like article in this case. Though the corrective lenses manufactured out of the PMMA has a different production process and have a different cost structure, the end use of the product is for vision corrective use. The physical characteristics of both the products closely resemble though the chemical composition and production processes are different. The users would not differentiate the products unless they are well informed about the difference in quality of the products. It is therefore, difficult to accept the argument that they are not technically and commercially substitutable product for the product under consideration.

The Authority notes that raw material content is neither an essential feature nor the description of the product. It is the end use, which is most critical. Plastic Ophthalmic Lenses meant for corrective purposes are the "product under consideration". The petitioners have further clarified that lenses made out of CR-39 are primarily used for corrective purposes and Coloured Plano Acrylic Lenses are neither an issue of contention nor covered under the scope of investigation as confirmed by the petitioners.

It has also been brought to the notice of the Authority that the non-corrective lenses manufactured out of PMMA are mostly coloured sunglasses where the coloured pigments are mixed with the plastic raw materials at the time of injection. On the other hand CR 39 lenses cannot be coloured like the PMMA lenses. They are generally provided tinges through coating process after the lenses are cast and cured. Due to the curvature that is required to be given to a corrective lens which distorts the colour given to PMMA lenses at the time of injection, PMMA corrective lenses are also white lenses. This is one of the major distinguishing features of corrective lenses, which separates them from non-corrective sunglasses.

Considering the arguments put forward by all the interested parties to the investigation and the investigation conducted by the Authority, the Authority is of the view that all plastic plano coloured glasses used for non-corrective or protective use are not technical and commercial substitute of the product under consideration and therefore not 'like articles'. However, all plastic corrective lenses (other than the plano coloured glasses), irrespective of the raw material used, whether coated or uncoated are technical and commercial substitutes of the product under consideration and therefore are 'like articles' for the product under consideration.

In response to the disclosure statement the interested parties have again argued for exclusion of non-coloured non-corrective plano lenses also from the purview of the investigations. But authority has already noted above that colouring is one of the most crucial element to distinguish corrective lenses from non-corrective lenses and therefore do not find any merit in this argument.

As far the specialty lenses are concerned, the Authority has applied the same technical and commercial substitutability criteria. These special coated lenses are manufactured out of the basic lenses through the process of coating after the lenses have been caste and cured. But the process is incremental only and end use is basically same. Only the cost may vary because of the cost involved in coating. As far as technical and commercial substitutability and end use is concerned these lenses are clearly the 'like article' for the product under consideration.

The interested parties have again raised the issue of exclusion of specialty lenses in their submission to the disclosure statement on the grounds that coated lenses are not manufactured by the domestic industry and the product of the domestic industry cannot substitute the imported coated lenses. This contention of the parties does not appear to be correct. The domestic industry has coating lines in the production facilities except for M/s Prakash Plastics and they have substantial production of coated lenses. Secondly the substitutability of the domestic lenses by the imported lenses is also to be examined. The authority has examined the technical and commercial substitutability, function & uses of the products, resemblance of the physical and chemical characteristics, user's perception of switching over from one product to another, similar production process, end product substitutability as argued by the parties and holds that the coating requirement in these specialty lenses are only incremental activity and might have specific uses but it can easily substitute a marginally inferior product if price is comparable. Therefore authority holds that imported specialty lenses can substitute the coated lenses

manufactured by the domestic industry and therefore, should be treated as 'like product'.

C Initiation and standing of the domestic industry

C.1 Views of the Exporters, Importers and other Interested Parties

The interested parties to the investigation have submitted that the petitioners in this case i.e. M/s Techtran Polylenses and M/s Indian Ophthalmic Pvt. Ltd, have imported the subject goods and therefore, do not qualify to be treated as the domestic industry as per the definition under Rule 2. It has been therefore requested, that by virtue of these imports, the aforesaid producers should be excluded and the domestic industry standing be examined with regard to the remaining manufacturers – that is M/s Prakash Industries and M/s India Optics.

The interested parties further contend that M/s Indian Ophthalmic Lenses Manufacturing Co. Pvt. Ltd. is a company having significant foreign shareholding. Its principal shareholders are Essilor which is a French Multinational and M/s Sola Optical Lens Marketing Pvt. Ltd., which is a wholly owned subsidiary of an Australia based Multinational. The anti-dumping proceedings are being used by the multinationals for their benefit. Such companies should not be considered as falling within the purview of domestic industry. For these reasons, the aforementioned manufacturers should not be included in the definition of domestic industry for the purpose of the present proceedings.

The interested parties have reiterated their stand on this point in their response to disclosure statement.

C.2 Views of the Petitioners

M/s Techtran Polylenses has confirmed that they have not imported the subject goods during the POI. However, their subsidiary undertaking M/s Techtran Ophthalmic Pvt. Ltd. has imported only 2300 Pairs of lenses purely on experimental basis for study purpose. M/s Indian Ophthalmic has also confirmed that they imported only 1949 pieces of lenses during this period for testing and bench marking purpose and not for commercial activity.

C.3 Examination by the Authority

As per Rule 2(b) of the Anti Dumping Rules, "domestic industry means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry."

The standing of petitioners has been examined by the authority in the light of the above issues raised by the interested parties and the submissions of the

petitioners. The Authority notes that import of finished product in small quantities by the manufacturers for testing and benchmarking against international standards is a normal practice world over. The provision under Rule 2 referred above does not apply to such insignificant and non-commercial imports to disqualify them to approach the Authority under antidumping provisions.

As far as foreign holding in M/s Indian Ophthalmic is concerned, the Authority notes that it is an Indian company registered under Indian Company Law which permits certain level of foreign holding. Authority also notes that neither the Agreement nor the Indian Antidumping Rules have made any specific provision to debar such companies with foreign holdings to seek relief from unfair trade practices. Only the domestic sale entitlement of M/s Techtran Polylenses has been taken into consideration for the purpose of domestic capacity and determination of major proportion of domestic producers approaching the Authority. Therefore, the Authority is of the view that the petitioners command required standing to file the above petition on behalf of the domestic industry.

D De Minimis Limits

The investigation based on DGCIS data reveals that exports of the subject goods from China constitute about 75% of total imports of the like article. However, imports from Chinese Taipei are below de minimis level of 3% and therefore, the authority has excluded Chinese Taipei from the dumping and injury investigation. This has also been confirmed by the petitioners themselves in their response to the disclosure statement.

E Other issues raised

The interested parties to the petition have submitted that the cost structure of the most efficient domestic industry may be taken into consideration for working out the NIP for the Domestic industry. The interested parties have quoted M/s Prakash Plastics Chennai and M/s Indian Optics, New Delhi as the efficient producers of the subject goods. The authority conducted verification of these two producers' data and to the extent possible M/s Prakash Plastics data has been taken into account in the determination as a part of the Domestic industry.

The submissions of M/s Indian Optics have also been taken into account and the Authority also conducted a verification of its production facility at Gurgaon as well as its cost of production on its own request during the public hearing. However, the Authority notes that the said producer did not have any production during the POI. Moreover, this company is primarily an importer of plastic lenses and has started production only recently. Therefore, the company does not qualify for being considered as a part of the domestic industry within the scope and meaning of the term as defined in the Rules. However, the Authority has taken note of some of the aspects of production and costs of this company in its best practices examination to the extent possible

F. Determination of Normal Value, Export Price and Dumping Margin

F.1 The following exporters from China have responded to the initiation notification and have fully cooperated in the investigation process:

1. M/s Y&S Tianjin Industry (M/s Golden Dragon)
2. M/s Wenzhou east Optical
3. M/s wenzhou Mingda
4. M/s Wenzhou wezhou Group

a) M/s Y&S (Tianjin) Industry (M/s Golden Dragon)

M/s Y&S (Tianjin) Industry (supporting manufacturer M/s Golden Dragon) is a producer/ exporter of CR39 lenses from China and produced its cost of production and export data for verification. They have submitted that their cost of production is low because of availability of local raw materials (initiators) at a very cheap price and other factors of production are also cheap. The authority has taken into account the verified data of this exporter to the extent possible

b) M/s Wenzhou East Optical, M/s Wenzhou Mingda and M/s Wenzhou Wezhou Group

This exporter in its questionnaire responses and subsequent supplementary submissions made a plea that they manufactured and exported PMMA sunglasses only during the POI. They also claimed that PMMA sunglasses are a different product and should not be treated as like product. During the exporter verification the Authority noted that this manufacturer exporter produces PMMA sunglasses through injection moulding process. However, it was also observed that this company manufactures PMMA sunglasses, corrective lenses made of PPMA and CR-39 lenses in the same premises. The exporter has however submitted that they did not export any PMMA corrective lenses to India during the POI or thereafter and the entire production of these reading glasses are for their home market and African Markets. CR-39 production line is also a recent addition and there was no export of this product to India during the POI. Therefore, they have not provided any cost information for PMMA corrective lenses and CR39 lenses.

M/s Wenzhou Mingda Optical Company responded to the initiation notification as a manufacture of the subject goods, exported through M/s Wenzhou Wezhou Group Company, which is a trading Company and has exclusive manufacturing arrangement with Mingda. Verification revealed that both the companies deal only with PMMA sunglasses.

F.2 Assessment of Dumping Margin –Methodology and Parameters

F.2.1 China

a) Normal Value

In response to the initiation notification of the Designated Authority M/s Y & S (Tianjin) Industries Ltd filed its response as an exporter of the CR-39 lenses along with their cost data, export sales invoices and domestic sales data. This exporter also claimed market economy status for the purpose of determination of normal value. However, during the verification of the exporters data on their request it was noticed that the above company is not a manufacturer, but a trading company for various products and the optical division of this company has an exclusive manufacturing arrangement (vide an agreement dated January 1, 2000) with one M/s Golden Dragon optics Ltd. Jiangsu, China. The production facility of M/s Golden Dragon was shifted to Danyang in 2003 which was visited and verified by the Authority. This manufacturer produces only Corrective lenses out of CR-39 and other hard resins. The manufacturer has no domestic sales. As per the exclusive agreement entire production of this manufacturer is traded through M/s Y & S (Tianjin) as an intermediary. TVA invoices of M/s Golden Dragon are raised in the name of M/s Beijing Kaishengao Import & Export Co. Ltd. (KSA), which is a Government agency. Import & Export permits of this company are used by the exporter for the purpose of obtaining TVA rebates and duty refunds on exports. This Intermediary Company is supposed to operate on Commission basis but details of their transaction etc. were not available for verification. Final export invoices are raised by M/s Y&S Industries and payment is made to the manufacturer through this intermediary agency. However, as the manufacturer exports its entire production through the cooperating exporter through exclusive supporting manufacturing arrangement and maintained the production data, their data was duly verified and accepted to the extent admissible.

However, the exporter has submitted a misleading questionnaire response as a manufacturer whereas it is only an exporter of the subject goods though they had a valid tie up agreement for manufacturing the subject goods. The exporter and the manufacturers did not have an export permit during the POI and had to route all their exports through a Government Agency. The transaction details and arrangements between these intermediaries could not be verified. Therefore, the export pricing decision of the exporter does not seem to be entirely free from Govt. intervention though the production facility is in the private control, as the role of the Govt. agency involved in the sales transactions is not clear. There is no domestic sale of the subject goods and third country exports are also routed through these intermediaries. In view of the facts stated above, market economy status and individual treatment for the purpose of dumping margin determination cannot be granted to the exporter in this case. Therefore, the authority proposes to construct the normal value for the whole of China as a single economic entity. However, to the extent data has been verified the same is proposed to be used for construction of normal value of the subject goods.

The production process and consumption norms and certain cost elements of the manufacturer, as verified, of the manufacturer i.e., M/s Golden dragon has been used to work out the normal value for. For the determination of the Normal value the Authority had adopted the cost of manufacturing of the cooperating exporter from China to the extent the data could be verified and found to be acceptable for construction of the normal value. However, as there is no domestic sales of the subject goods by the cooperating exporter, the normal value has been constructed. However, as far as SAG expenses are concerned the exporter's data could not be verified because of the involvement of two intermediaries. Therefore, Domestic industry's data has been used for SAG component. However, domestic industry's data contains production cost of finished as well as coated lenses and also capacity utilization of the domestic industry is very low. Therefore, this data has been normated at appropriate level and added to the manufacturing cost determined based on the exporter's verified data to arrive at the constructed cost for the domestic industry. A reasonable profit margin of **% has been added to this to arrive at Constructed normal value. The constructed Normal works out as follows:

Uncoated Lenses

		(Per 1000 Pairs)
i)	Manufacturing cost (Based on verified data of The exporter/manufactures)	RS
(a)	Material Costs based on Manufacturer/ Exporter's Verified Consumption and Purchase Records:	*****
(b)	Utilities	*****
(c)	Packing	*****
(d)	Direct Labour (Including Welfare Expenses)	*****
ii)	Administrative and Selling and General Expenses (Including Finance cost, Interest, Depreciation etc.) (Normated data of the Domestic industry)	*****
Total Cost of Production		*****
Add Reasonable profit (5%)		*****
Normal Value (Ex-works) (Rupees)		Rs*****
Normal Value (Ex-works) (US\$)		US\$*****
Exchange Rate (*****)		

Coated lenses

		US\$	RS
Cost of Uncoated Lenses	Per 1000 Pairs	*****	*****
Plus Coating	Per 1000 Pairs		
Charges			
% of uncoated lenses as per	***%	**	
Techtran's Data			
Cost of Coated Lenses			
Total		*****	
Cost			
Plus	**%	*****	
Profit			
Normal Value for Coated Lenses		*****	

Weighted Average Normal value for all lenses	*****
--	-------

In response to the disclosure statements the exporter has submitted that since they have cooperated and submitted information on their cost of manufacturing and SGA expenses the same should have been fully accepted and there was no reason for determining the SGA expenses on the basis of domestic industry's data. In this connection the Authority has clearly recorded the reasons for partial acceptance of the exporter's data in the disclosure statement and the preceding paragraphs. While the authority was fully justified to reject the entire data of the exporters in view of the misleading response filed by them, authority has taken their production data to the extent verified and found reasonable. Therefore, the authority do not find any merit in the arguments of the exporter in this regard and confirms the normal value determined as above.

b) Export Price

Weighted average Ex-works export price has been worked out on the basis of DGCIS data. All the export transactions of hard resin plastic ophthalmic lenses exported from China have been taken from the DGCIS data. For this purpose identification of the hard resin lenses from the DGCIS data, lenses with such description and imported in pairs have been taken into account. The export prices to India has been worked out after allowing adjustments to Ex-works price after making level of trade adjustments with respect to Ocean Freight, Port Handling Charges, Inland Freight, Commission and other expenses. For the purpose of these adjustments actual costs as reflected in the cooperating exporter's invoices have been taken. Accordingly the ex-works export prices work out as follows:

Export Price**Per thousand pairs**

	RS	US\$
C & F value Per Thousand Pairs	*****	*****
Less Ocean Freight and inland Freight	*****	
Less Commission **%	*****	
Total deductions	*****	*****
Ex-Works Price		
Exch rate		
US\$1=Rs ****		

The petitioners in their response to the disclosure statement have argued that the export price worked out on the basis of the import data appears to be skewed because some of the imports of these lenses appear to have entered the Indian market under different descriptions and therefore, actual export price should be much less than what has been worked out by the authority. However, the authority notes that the weighted average export price has been worked out on the basis of the data provided by DGCIS after identifying the Hard resin lenses imported in pairs from the consolidated data of the DGCIS and find no reason to disregard the same. Therefore, the export prices worked out above are confirmed.

c) Dumping Margin

The weighted average normal value so arrived at has been compared with the weighted average ex-works export price to arrive at the Dumping margin

	US\$
Weighted Average Normal value (constructed)	*****
Weighted Average Export Price as per DGCIS data	*****
Weighted Average Dumping margin	*****
DM In %	7.18%

F.2.2 Chinese Taipei

Since the volume of imports of subject goods from Chinese Taipei is below de minimus level of 3% as confirmed by the petitioners themselves, the Authority has excluded this country from the antidumping investigation.

G. INJURY DETERMINATION**G.1 Views of the Interested Parties**

The interested parties to the investigation have submitted inter-alia that Clause (v) of Annexure II, to the Rules provides that injury caused by other factors must not be attributed to the imports. The list of factors considered relevant for this purpose included the productivity of the domestic industry. The anti-dumping law does not wish to subsidize or encourage the inefficiencies of the domestic producers. Therefore, for the purpose of fixation of the Non-Injurious Price, the cost of production to be adopted should be of the most efficient and cost effective manufacturer. It has been submitted that such an exercise has not been carried out and the cost of production of M/s Techtran has been simply adopted. It has been requested that the cost of manufacture of other producers such as M/s Prakash Industries and M/s Indian Optics Ltd. should also be ascertained, for an appropriate fixation of non-injurious price. The present NIP allegedly includes the cost of inefficiency and over-manning of M/s Techtran.

The interested parties have also submitted that there is a total absence of causal link between the imports and injury if any to the domestic manufacturers. The findings do not indicate any volume or price effect of the imports on the domestic producers. The sales have increased as has the production and the sale price. Therefore, the realizations have increased during the POI. In the petition itself, it is shown that the profitability has increased. Thus, there is neither any injury nor any causal effect between the imports and the injury claimed by the petitioner. The interested parties have iterated their stand in respect of injury and causal link in their responses to the disclosure statement.

G.2 Views of the Domestic Industry

The views of the domestic industry have been dealt in the preliminary finding in fair detail and are not repeated here for the sake of brevity. However, the petitioners in their response to the disclosure statement have raised the following points:

(a) VOLUME EFFECT:

The petitioners have argued that the imported volumes as reported in the disclosure statement are understated due to the fact that several major importers have imported CR-39 under the descriptions of "CR-39, Hard Resin, Plastic Lenses and Spectacle Lenses", thereby misleading the statistics. They have further argued that only the resale invoices and the resale customer's names would confirm that they are CR-39 lenses. Indian market for corrective plastic lenses is growing fast but the Domestic Industry is unable to participate in that growth. The corrective lens total demand has increased from 2000-2001 to 2001-2002 by 10,98,462 lenses, out of which increase China has seized substantial amount of 5,74,568 pieces or 52% of the market growth. The Domestic Industry is unable to benefit from the Domestic growth rate fully, primarily due to price undercutting and dumping of Chinese lenses. While Chinese imports grew at a rate of 48% from 2000-01 to 2001-02, the Domestic Industry grew at less than half of that rate, to be exact 23%.

(b) SALES OF DOMESTIC INDUSTRY:

The petitioners further argue that the Domestic Industry sales have increased from 1999-00 to 2001-2002, primarily due to restart of SRF shut-down unit by the new owner, M/s Indian Ophthalmic Lenses Manufacturing Company, Bangalore in the year 2000 and ramping up production in 2001. They have been operating under heavy losses just to obtain some market share in the expanding domestic market. M/s Techtran Polylenses, another member of petitioners, has experienced sale volume reduction during the period of investigation as compared to year before, by 7.3%. In spite of new additional capacity coming on line, the total Domestic Industry growth rate remained at half of that of Chinese Imports growth rate.

(C) PRICE EFFECT:

The petitioners have reiterated their stand that the landed value of Chinese imports is overstated, due to probably, non inclusion of CR-39 lenses disguised under various names of Plastic Lenses, Spectacle Lenses etc. The price undercutting is, in the view of the petitioners, far steeper than recorded. The Domestic Industry is able to improve its efficiencies and reduce cost of production. Further, they argue that discerning Indian Optician/consumer is slowly and steadily coming to appreciate the superior quality of domestic product as against the dumped seconds of Chinese and is willing to pay some premium, resulting in increase of sales realization per unit. But however, the sales realization of Domestic Industry is still much lower than the non-injurious price, contributing to heavy losses of the Domestic Industry.

G.3 Examination by the authority

Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the Volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

Injury analysis of the domestic industry has been done afresh as the injury caused to the domestic industry on account of the dumped imports of Corrective (CR-39 and other hard resin lenses) lenses alone is required to be taken into account. However, the data submitted by the domestic industry along with the

petition appears to be based on the import data of all type of plastic lenses. The injury data of the domestic industry was also based on the data of only one petitioner i.e. M/s Techtran Polylenses. The injury analysis has been done afresh with reference to 15-point parameter as laid down in Appendix II to the Rules, taking into account Corrective plastic lenses import as per DGCIS data and the combined injury data of the domestic industry. As far as the accuracy of data concerning the imports from China as raised by the petitioners are concerned, the Authority has examined the data provided by DGCIS for the entire injury determination period and does not find any merit in the arguments of the petitioners in respect of its accuracy or reliability. Hard resin lenses imported in pairs and identified thus in the DGCIS data has been taken into account for all such analysis, including determination of export price.

For the purpose of injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to establish injury and causal links between the dumping and injury, if any. Since positive dumping margin has been established for the exports from China, entire exports from that country has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal links.

G.3.1 Volume Effect of dumped imports and impact on domestic Industry

- a) Demand, Output and Market shares
- b)

	Nos. in Pieces		
	1999-00	2000-01	2001-02
Installed Capacity for domestic sales	5150000	5250000	5250000
Production	1201317	3027990	3562530
Total Imports	249392	278060	919078
Domestic sales	865869	1990956	2448400
Total Demand (sales + imports)	1115261	2269016	3367478
Imports from Subject country (China) (dumped imports)	139178	140178	714746
Imports from Other countries	110214	137882	204332
Total Import as % of total Demand	22.36%	12.25%	27.29%
Import from China as % of total demand	12.47	6.17%	21.22%
Imports from other Countries as % of total Demand	44.19	49.59	22.23
Capacity utilization	NA	58%	68%
Sales as a % of production	72.07%	65.75%	68.72%
Market Share of DI as % of total Demand	77.63%	87.75%	72.71%
Profit/Loss (Rs in Millions)	(10.34)	(70.91)	(58.91)

The above data shows that the volume of dumped imports from China is significant and has increased substantially over the years. This has resulted in truncating the sales of the domestic industry and its share in total demand. The

market share of the DI has fallen from 87% in 2000-01 to 72% during the POI. The rise in inventory is also evident from the fact that sales as a percentage of production remains low and has fallen from 72% in 1999-00 to 69% in 2001-02. Capacity utilization of the Domestic Industry has improved over the years but remains uneconomically low.

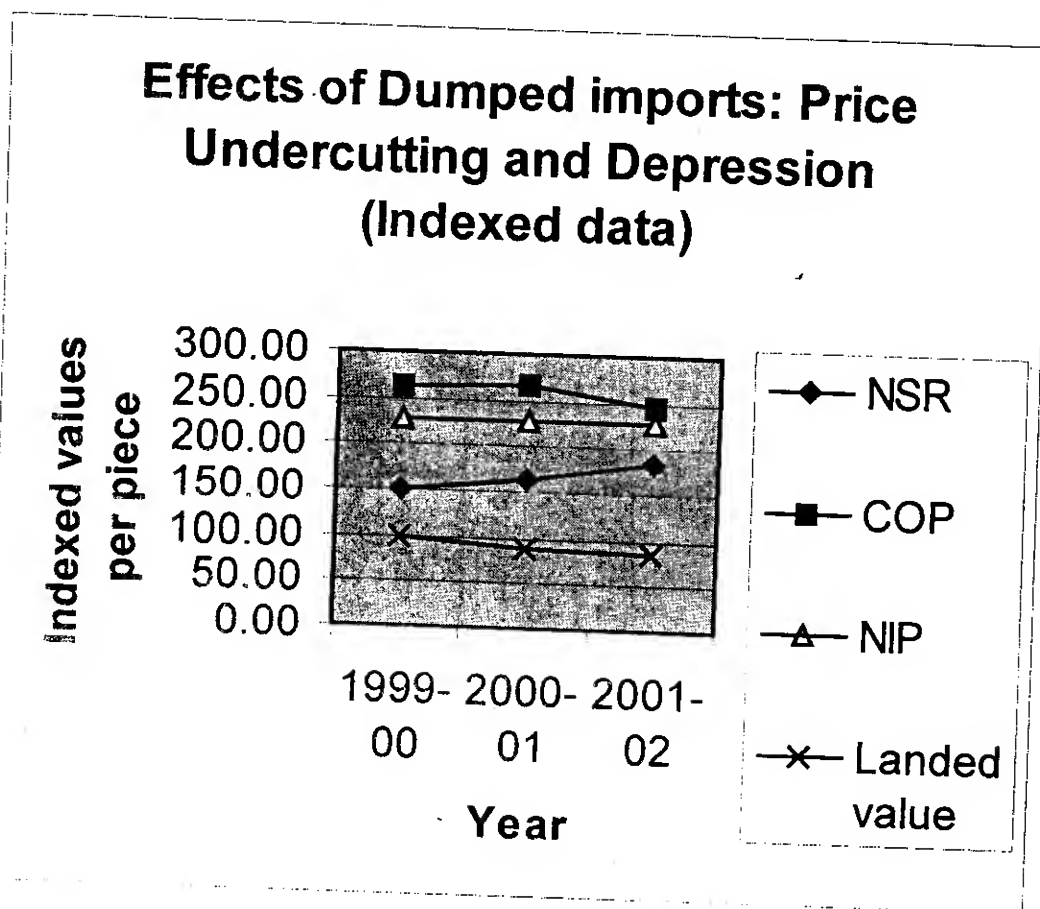
G.3.2 Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

The table below shows the weighted average cost of production of the DI, weighted average Net Sales Realization and the Non-injurious Price as worked out by the costing division after normating the costing information of the DI.

	Indexed data (Rupees Per Piece)		
	1999-00	2000-01	2001-02
Landed value of Exports from China	100	89.0059	86.09941
Landed value of exports from other countries	100	91.34454	86.68067
Net sales realization of Domestic Industry	100	109.9409	122.5852
Cost of Production of Domestic Industry	100	102.1129	94.33871
NIP of Domestic Industry			*****
Price Under Cutting (NSR - Landed Price)	100	151.8267	196.1767
Price Under cutting as % of the NSR	100	138.111	159.9276
Price Underselling (NIP - Landed value)			*****
Price Underselling as a % of Landed Value			150 to 170%

For the purpose of price underselling and price undercutting the authority has compared the weighted average values of all transactions as reflected in the table above. The above data shows that the dumped imports from China undercuts as well as undersells the prices of the domestic industry to a very substantial extent. The Authority worked out the landed value of the imports from the subject country by adding 1% landing charges and the applicable basic customs duty to the CIF import price. For the purpose of determination of Net sales realization of the domestic industry rebates, discounts and commissions and Central Excise duty paid has been excluded.

G.3.3 Price suppression and depression effects of the dumped imports:



The graph above shows that the NSR of the domestic industry has shown some improvement during the POI but still remains below the Cost of production and Non Injurious Price. The improvement in the NSR of the domestic industry has been mostly due to change in product mix and product improvement. On the face of dumped imports the domestic industry has increased its production of semi-finished lenses which fetches higher realization whereas finished lenses segment remains depressed. The cost of production also shows gradual improvement and moves towards the normated NIP. However, as stated above the improvement in NSR and COP is mostly due to change in the product mix of the domestic industry, moving towards more of semi-finished and coated lenses, which fetches higher prices. Therefore, the figures above might be showing improvement during the POI but the fact is that the dumped imports have forced the Domestic Industry to depress its prices in order to protect their market share by keeping their prices lower than their cost of production to meet their prices to the low priced dumped imports. The competition from imports is mostly at the lower end un-coated and coated lenses where the prices have remained depressed. The price suppression effects of the dumped imports are also evident from the fact that the dumped imports have prohibited the domestic industry from raising its prices to recover its full cost.

Having examined the volume and price effect of the dumped imports on the domestic industry and its prices through price undercutting, underselling, price suppression and price depression effects and the dumping margin the authority examined the injury parameters to find material injury or threat of injury, if any, to the domestic industry.

G.3.4 Injury Parameters

i) Output and Capacity utilization

The output level of the domestic industry has remained much below the installed capacity and the capacity utilization is low. In fact one of the major producers i.e., M/s Indian Ophthalmic is operating only half a shift per day in order to avoid accumulation of inventory. Inventory level of M/s Techtran on its domestic sales entitlement and IOML is also very high. Inventory level of M/s Techtran at the end of 2001-02 was ***** against ***** at the end of 2000-01. The improvement in capacity utilization is primarily on account of restarting of the SRF unit by its new owners i.e., M/s Indian Ophthalmic Ltd. in spite of accumulation of losses in an attempt to establish themselves in the Indian market.

ii) Market share and Growth of the industry

There is a good demand for the product in the domestic market as is evident from the fact that total demand for the product has grown almost by 200% between 1999-2000 and 2001-02. Though potential for growth exist as plastic lenses continue to replace the age-old glass lens segment, the market share of the domestic industry has fallen during the comparable periods. The growth in demand has been mostly cornered by the imports from China as can be seen from the table in the earlier section. Share of Chinese imports has increased substantially from 12% to 22%. The Domestic Industry is unable to benefit from the Domestic growth rate fully, primarily due to price undercutting and underselling of dumped Chinese lenses. While Chinese imports grew at a rate of 48% from 2000-01 to 2001-02, the Domestic Industry grew at less than half of that rate. There has been no substantial capacity expansion during this period as the profitability remains low.

iii) Productivity

Productivity of the domestic industry has increased over the period against which the injury is being analyzed. This is also reflected in the COP of the industry. The industry has been trying to reduce the cost and improve productivity of the resources employed through changes in product mix and improvements in production process to meet the challenges of low priced imports.

iv) Profits, and Actual and Potential Effects on the cash flow

The domestic units have been suffering heavy cash loss as reflected in the balance sheets of the petitioners. One domestic unit set up by SRF incurred heavy losses and could not operate economically resulting in distress sale to a multi-

national subsidiary, Indian Ophthalmic Lenses Manufacturing Co. Pvt. Limited. The reorganized unit is functioning at reduced capacity. Techtran Polylenses Ltd. is struggling to service the debt burden and continues to remain as non-performing asset to the financial institutions. Forbes Gokak Ltd., a TATA subsidiary, had set up a plastic lens manufacturing facility at Aurangabad and closed after incurring accumulated losses of Rs.700 Million and loss of employment of some 250 person. However, through the process of product improvement and changes in product mix the domestic industry has been able to reduce its losses marginally during the POI but the losses still remain substantial as the Net sales realization remains much below the cost of production due to price suppression and depression effects of the dumped imports from the subject country.

v) Employment and wages

As stated above there has been substantial employment loss due to closure of certain units in the past though the employment loss in respect of the petitioners, during the injury investigation period has been marginal. However, employment and wages are governed by the labour law of the Govt. and can not have a direct impact due to the dumped imports, unless the units become sick or close down. The fact that the units like IOML are operating even for less than a shift per day indicates that there is a potential threat of job loss to the industry.

vi) Return on investment and ability to raise capital

The industry has a negative return on investment in all the three years because of the cash loss on its domestic sales. As a result of which the original promoters of IOML have exited through distress sale of the unit to a multi-national subsidiary, Indian Ophthalmic Lenses Manufacturing Co. Pvt. Limited. The reorganized unit is functioning at reduced capacity. Techtran Polylenses Ltd. is struggling to service the debt burden and continues to remain as non-performing asset to the financial institutions.

vii) Investment

There has been no significant fresh investment and capacity addition in this product segment as the prices remain depressed and profitability remains negative.

viii) Magnitude of Dumping and factors affecting prices

The prices in the market are not affected by any other factor, other than the demand and quality of the products. The domestic industry has been able to cut the prices in lower end segment and revised the product mix to remain in business in spite of huge loss. The margin of dumping determined has been found to be Substantial and above de minimus.

G.4 Other Known factors and Causal Links

None of the interested parties have brought to the notice of the Authority any other factor that might be causing injury to the domestic industry. However, to the extent possible the following factors have been examined by the Authority to identify and exclude other factors and not to attribute them to the injury caused by dumped imports as per the non-attribution clause of the ADA.

i) Volume and prices of imports from other sources

Volume of imports from other sources has been shown in the table earlier. However, dumped imports from China constitute almost 75% of total imports and therefore, have an overwhelming effect on prices. Imports from other sources are at a marginally higher price compared to Chinese imports and have not contributed significantly to the injury of the domestic industry.

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

The demands of the subject goods have been on the rise and there is no symptom of contraction of demand in the domestic market. Moreover, the preference for plastic lenses over glass lenses is also on the rise and therefore, the consumption pattern is favorable towards the subject product and therefore, cannot be a cause of injury to the domestic industry.

iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. Since the petitioners constitute almost 100% of the capacity in the country, there is no unfair competition amongst them. The volume of trade from other sources is small and widely dispersed compared to Chinese imports and prices are also quite comparable for the same segment. Therefore, there is no unfair competition amongst various foreign producers for Indian market.

iv) Development of technology and export performance

The domestic industry, particularly M/s Techtran and M/s IOML have state-of-the-art, fully automated plants and produce the subject goods of very high quality. Compared to the technology adopted by the Chinese manufacturers these domestic manufacturers have better technology and production process though the raw material used is same. Therefore, technology is not a factor, which could be attributed to the injury. M/s Techtran is an export-oriented unit and has been fulfilling its export obligations. M/s IOML has also been exporting substantial quantities through its foreign principals in the high-end segment. Therefore, performance in exports segment cannot be attributed to the injury of the domestic industry.

v) Productivity of the Domestic Industry

Total output and capacity utilization of the domestic industry has been low due to depressed prices. However, the fixed cost and overhead expenses of the domestic industry (including SGA expenses, interest payment/finance cost) have been very high which is partially contributing to the injury of industry. But had the industry been able to achieve full capacity utilization, per unit SGA expenses and the fixed cost would have been reduced substantially. However, while normating the cost of production in its Non-injurious price determination the Authority has neutralized the effects of these higher cost elements by adopting an optimum capacity level and therefore, the effects of these inefficiencies have been eliminated and not attributed to the injury caused by the dumped imports.

G.5 Determination of Non-injurious Price of the Domestic Industry

The authority determined a Non-injurious Price for the subject goods after a detailed analysis and scrutiny of information provided by the domestic industry and verified by the authority.

The cost information on all relevant factors concerning the production and the production process were called in the prescribed pro-forma for the period of investigation and for the preceding years. The actual cost of production of the subject goods for the domestic industry has been used to determine optimum cost of production on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP). In the determination of Non-injurious price for the domestic industry, the Authority has examined and analyzed, in detail, all the relevant factors including cost of raw materials used in the production of subject goods, the consumption thereof, the cost of utilities viz. Power, water etc., interest cost, cost of labour, depreciation cost and selling and administrative expenses. The factors such as investments made in Plant and the capacity utilisation have also been examined in the cost analysis. All these factors have been determined with reference to the basic books of accounts and production and financial statements. The Non-injurious price for the domestic industry has been determined by addition to the cost of production of a reasonable profit margin on the capital employed by the petitioner.

Accordingly, weighted average Non-injurious price for the domestic industry has been determined by the Authority as Rs.***** per piece of Plastic Ophthalmic Lenses.

G.6 Magnitude of Injury and injury margin

The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from China has been arrived as follows:

Injury Margin Calculation		
Rs Per 1000 Pairs		
Weighted Average C & F Price as per		*****
DGCIS data		
Plus Landing		*****
Charge	1%	*****
Assessable Value		*****
Plus basic customs duty	30%	*****
Weighted Average Landed		
price		20440.00
NIP		*****
Injury Margin		About 150-170%

Injury margin expressed as a % of landed value works out to about 150-170% and is found to be significant.

G.7 Conclusion on injury and causal links

On the basis of the above analysis the authority concludes that

- i) The dumping margin of the subject goods imported from China is substantial and above de minimis;
- ii) The domestic industry has suffered material injury in the form of low capacity utilization, low market share, and cash loss as the prices of the subject goods remains depressed due to price undercutting, price underselling, price suppression and depression effects of the dumped imports from China and the injury margin as calculated by the Authority is also positive;
- iii) No other known-factors have been found to contribute to the injury of the domestic industry, except the higher fixed cost and SGA expenses of the domestic industry. The fixed cost and the SGA expenses have been normated in the NIP and in the constructed the normal value of the exporter. Therefore, the injury caused by this factor has not been attributed to the dumping from China.
- iv) There is a clear causal link between the dumped imports and the injury suffered by the domestic industry and the injuries caused by other factors have not been attributed to the injury suffered by the domestic industry. Thus volume and prices of imports from China at dumped prices have contributed to the material injury of the domestic industry.

H. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-

establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

The Authority notes that the product under consideration is a product which is directly used by the consumers and does not go into further processing to a substantial extent. While recognizing that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product to the consumers it will have no other effect like competitiveness of the product manufactured by the downstream industry, as no such industry exists in this case. However, there exists a huge intermediary network of the spectacle opticians and there is a good margin between the cost of lenses and the finished spectacles. Therefore, the effect of such a measure will be marginal on the consumers. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

Importers of the subject goods i.e. the intermediary traders have argued that the imposition of anti dumping measures would encourage illegal imports of these lenses through couriers and other means due to the very nature and weight of the product itself and this will have a harmful effect on the domestic producers and even to the interest of consumer. However, the authority is of the view that the objective of the antidumping law is to protect the domestic industry against unfair trade and not against illegal trade for which different legal and administrative mechanisms are available.

I. CONCLUSIONS

After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties or otherwise as recorded in the above findings the authority concludes that:

- i) The subject goods originating in or exported from the subject country have been exported to India below its normal value.
- ii) The domestic industry has suffered material injury
- iii) The injury has been caused to the domestic industry both by volume and price effect of dumped imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

Having concluded the existence of dumping from the subject country is injury to the like product domestic industry and causal link between the dumping and injury as established herein the Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods in the form and manner described hereunder and falling under chapter 90, classified under Customs Code 9001.50 Schedule I of the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995, originating in or exported from the subject country

Having regards to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping so as to remove the injury to the domestic industry accrued on account of dumping. Considering the nature of the product and broad price differentiation the Authority is of the view that imposition of antidumping duty on ad velorem basis on the assessed value of the subject goods upon importation into India would be appropriate measure to neutralize the effects of dumped imports. Accordingly, it is recommended that definitive anti dumping duties on ad velorem basis as indicated in the column 3 of the table below be imposed, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries under Chapter 90 Customs sub-heading 9001.50 the Customs Tariff.

Sl. No	Sub Heading or Tariff Item	Description of Goods	Specific ation	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty (%)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)
1	9001.50	Corrective Plastic Ophthalmic Lenses	Excluding Plano Coloured Lenses	People's Republic of China	Any Country	Any Producer	Any Exporter	7.18%
2	9001.50	Corrective Plastic Ophthalmic Lenses	Excluding Plano Coloured Lenses	Any Country	People's Republic of China	Any Producer	Any Exporter	7.18%

Subject to the above, the Authority confirms the Preliminary Findings dated 8th August 2003.

I.1 An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act, supra.

I.2 The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act, supra and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority